नव किरण

हिंदी साहित्य सेवा को समर्पित मासिक पत्रिका

प्रवेशांक मई 2020

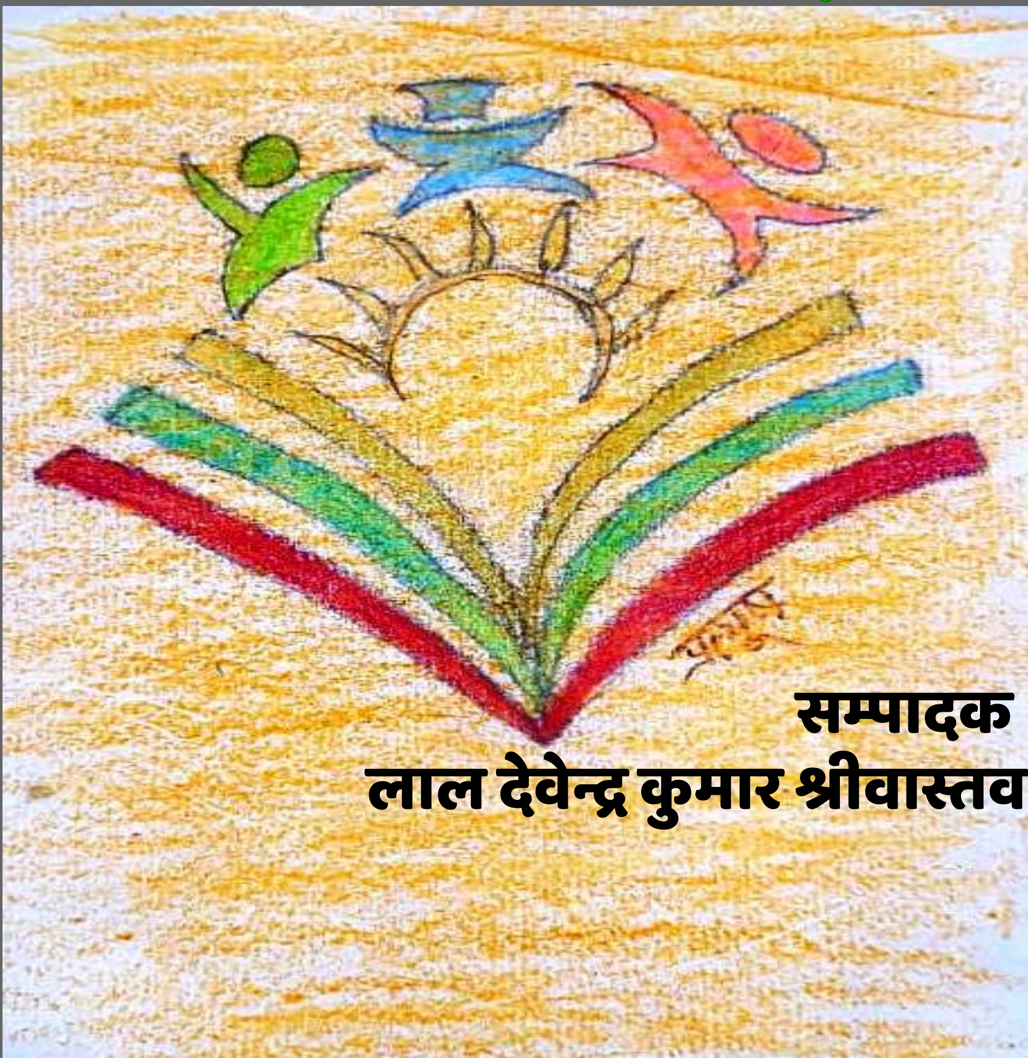

सम्पादक

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

नव किरण मासिक ई-पत्रिका

हिंदी साहित्य सेवा को समर्पित मासिक ई-पत्रिका

(पूर्णतयः अव्यवसायिक)

प्रवेशांक मई 2020

सम्पादक मण्डल

(सभी पद अवैतनिक हैं)

विजय कुमार श्रीवास्तव — **संरक्षक**
बस्ती, उत्तर प्रदेश

डॉ अरविन्द श्रीवास्तव 'असीम' — **सलाहकार**
दतिया, मध्य प्रदेश

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव — **सम्पादक**
बस्ती, उत्तर प्रदेश

डॉ अजय कुमार — **उप-सम्पादक**
पटना, बिहार

चित्रांकन, छायांकन, रेखांकन

शोभित गुप्ता
रामपुर, उत्तर प्रदेश
+91-7838110755
mail4shobhit@gmail.com
www.ShobhitGupta.in

(पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ लेखक के निजी विचार हैं,
सम्पादक या सम्पादकीय मण्डल का कुछ भी लेना देना नहीं है।
कोई विवाद होने पर लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा।)

"**नव किरण**" साझा राष्ट्रीय काव्य संकलन
के सफल प्रकाशन के बाद अब

"**नव सृजन**" साझा राष्ट्रीय काव्य संकलन
का होगा प्रकाशन।

कृपया जुड़ने के लिए रचनाकार संपर्क करें।
संपादक "नव सृजन"
फ़ोन: 7355309428
अंतिम तिथि 20 मई 2020

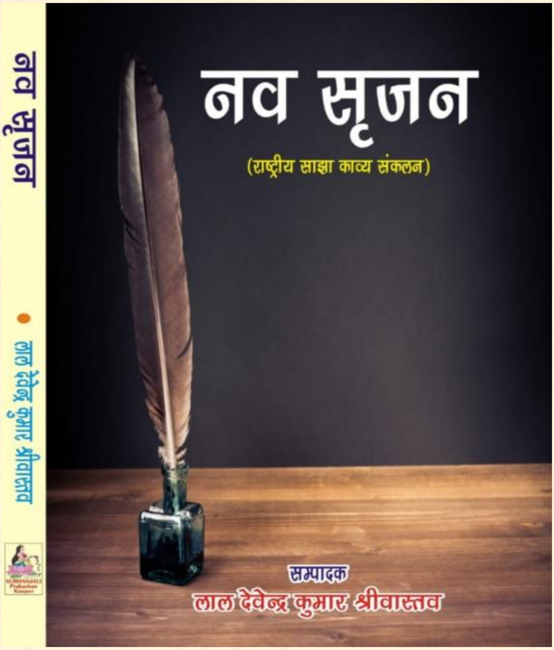

कोई भी साहित्यकार अपने
एकल काव्य संग्रह, लघुकथा संग्रह या कहानी संग्रह
प्रकाशन हेतु संपर्क करें
फ़ोन: 7355309428

अनुक्रमणिका

	सम्पादक मण्डल की कलम से	
1	विजय श्रीवास्तव	7-8
2	लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव	9-14
3	डॉ अजय कुमार	15-16
4	डॉ अरविंद श्रीवास्तव 'असीम'	18
	काव्य रचनाएँ	
1	अनिल श्रीवास्तव "अनिल अयान"	18
2	राजकुमार जैन राजन	19
3	डॉ गोपेश वाजपेयी	20
4	स्नेहलता द्विवेदी "आर्या"	21
5	राहुल कुमार बोयल	22
6	सुधा शर्मा 'कोयल'	23
7	रशीद अहमद शेख़ 'रशीद'	24
8	अनुपम आलोक	24
9	ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'	25
10	सारिका भूषण	25
11	प्रतिभा प्रियांशी	26
12	तरुण कुमार दाधीच	27
13	ओम प्रकाश खरे	28
14	भास्कर सिंह माणिक	28
15	कृष्ण कुमार कश्यप	29
16	श्रीमति गायत्री ठाकुर	30
17	प्रीति चौधरी (मनोरमा)	31
18	निशा नंदिनी भारतीय	32
19	प्रा. द्वारका गिते	33
20	निकेश सिंह निक्की	33
21	डा. प्रवीण कुमार श्रीवास्तव"प्रेम"	34
22	अनिता निधि	35
23	राजेश कुमार जैसवारा 'राज जौनपुरी'	36
24	डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा	36
25	रामचंद्र प्रधान "लोईंग"	37

26	डॉ सरला सिंह स्निग्धा	37
27	उषा लाल	38
28	रजत सान्याल	38
29	रोमित हिमकर	39
30	डॉ. वर्षा महेश "गरिमा"	40
31	महेन्द्र प्रताप विश्वकर्मा	41
32	डा अजीत कुमार सिंह	42
33	डॉ. प्रभा जैन "श्री"	43
34	प्रीती श्रीवास्तव	43
35	वर्षा श्रीवास्तव	44
36	राजेन्द्र यादव	45
37	यशवंत राय श्रेष्ठ	46
38	वीरेंद्र प्रधान	47
39	नीलम कुलश्रेष्ठ	48
40	खुशनुमा हयात	49
41	इमरान बस्तवी	49
42	अमित वर्मा" अम्बर"	50
43	साक्षी सांकृत्यायन	51
44	डॉ ओम प्रकाश रत्नाकर	52
45	हेमराज सिंह	53
46	वीणा	54
47	डॉ गौरव कुमार सिंह	55
48	अलका 'सोनी'	56
49	निधि भार्गव मानवी	56
50	रूपेश कुमार श्रीवास्तव 'रजत'	57
51	हरि प्रकाश गुप्ता	57
52	महेंद्र कुमार वर्मा	58
53	सुबोध कुमार वर्मा	58
54	आलोक सिंह "गुमशुदा"	59
55	सतीश कुमार	60
56	अजय प्रसाद	60
57	मनोज अहसास	61
58	लीना खेरिया	62
59	अंकिता सिन्हा	62
60	तारकेश्वर मिश्र जिज्ञासु	63
61	सीमा गर्ग मंजरी	64

62	दुर्गेश कुमार सजल	65
63	शोभा रानी तिवारी	66
64	शुभम पांडेय गगन	67
65	क्षितिज जैन	68
66	रवीन्द्र मारोठी रवि	69
67	महेश राठौर सोनू	70
68	आशीष भारती	70
69	अमलेन्दु शुक्ल	71
70	अपूर्व शुक्ला	72
71	प्रियंक खरे "सोज"	72
72	प्रज्ञा शर्मा	73
73	कोकिला अग्रवाल	73
74	कुन्दन बहरदार	74
75	संजीता घोष	75
76	दीपिका कटरे	76
77	शोभित गुप्ता	77
78	विजय कनौजिया	77
	लघु कथा – कहानी	
1	रशीद ग़ौरी	78
2	डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा	78
3	संजीव कुमार रंजन	79
4	संजय वर्मा "दृष्टि"	80
5	शिवचरण सरोहा	81
6	डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी	82
7	मयंक अग्निहोत्री	83-84
	बाल संसार	
1	लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव	85-86
2	भगवान प्रसाद उपाध्याय	87
3	राम लखन प्रजापति	88
4	डॉ. त्रिलोकी सिंह	88
5	मु. जलालुद्दीन खान	89
6	प्रमोद सोनवानी पुष्प	89
7	डॉ सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी	90
8	गौरव वाजपेयी 'स्वप्निल'	91
9	रंगनाथ द्विवेदी	92

संरक्षक की कलम से...

आज हिन्दी साहित्य के महासागर में एक साहित्यिक मासिक पत्रिका अपनी काव्य पुष्पों से भरी पत्रिका की नाव लेकर सृजन के सुगंध को चतुर्दिक प्रसारित करने निकली हैं।
इसमें अपनी रचना प्रेषित करने वाले प्रत्येक रचना कार का हम हृदय से सम्मान करते हैं। क्योंकि हम सब की अपनी पत्रिका "**नव किरण**" सहित्यिक मासिक की बुनियाद में हम सब समस्त रचना कारों की रचनाओं रूपी ईंटों पर रखी जा रही है।
इसका कुशल संचालन पत्रिका के प्रधान संपादक **श्री लाल देवेंद्र कुमार श्रीवास्तव** जी के हाथों में है। इनका हाथ एक सृजनकारी हाथ है एक कुशल लेखक, कवि, समाजसेवी और बहुत ही सहृदय एवं सच्चे इंसान है इनके सूर्य की रश्मि की तरह सशक्त प्रखर और उत्कृष्ट साहित्यिक स्तम्भ **डा० अजय कुमार** सहायक सम्पादक के रूप में इस पत्रिका को अपनी प्रतिभा से सजाएंगे संवारेंगे।
प्रत्येक रचना चाहे वह किसी की रचना हो एक नव किरण होती है जिस के आलोक से तिमिर दूर हैऔर प्रकाश होता है। मैं अत्यन्त हर्ष और विनम्र भाव से समस्त सम्मानित रचनाकार एवं समस्त गुणीजनों को प्रणाम करता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि "नव किरण" की ज्योति सर्वत्र जगमग हो
एक नव दीप जलाओ
तो कोई बात बनें
एक नयी राह बने-----

विजय श्रीवास्तव
संरक्षक, "**नव किरण**" मासिक ई पत्रिका

तो कोई बात बनें

चांद सूरज की तरह
तारों सितारोंकी तरह ।
दे सके सब लिए।
ज्योति जो कल्याणमयी ।
ऐसा नवदीप जलाओ ,
तो कोई बात बने ।
एक नई राह बने ।

तीरगी की रात ढले
तिमिर का साम्राज्य जले
तम में डूबी रजनी को
दीपों भरी रात मिले
दूरअधियारा हो
चहुं दिशि उजियारा हो
ऐसा नवदीप जलाओ
तो कोई बात बने ।
एक नई राह बने ।

दंभ अंधकार मिटे
स्वार्थ का बाजार मिटे
भ्रष्ट ,भ्रष्टाचार मिटे
आतंकी व्यवहार मिटे
एक नया बितान बने
एक नया बिहान बने
ऐसा नवदीप जलाओ
तो कोई बात बने।
एक नई राह बने ।

छद्म वेश धारीहटे ।
हिंसा के पुजारी हटे ।
अनीतिके व्यापारी हटे ।
स्वार्थी व्यभिचारी हटे ।
लोभ ,चाटुकारिता का ,
समूल नाश हो ।
जन-जन के मन में।
नैतिकता का वास हो ।
ऐसा नवदीप जलाओ तो
तो कोई बात बने।
एक नई राह बने।

सत्य त्याग,नैतिकता की।
घर घर में पूजा हो ।
सरवोपरि राष्ट्रधर्म ।
बाद में कोई दूजा हो ।
आपस में प्रीती जगे।
स्वहित का भाव भगे ।
परहित में जीवन हो ।
नैतिकता जागृत हो ।
ऐसा नवदीप जलाओ ,
तो कोई बात बने ।
एक नई राह बने।

विजय श्रीवास्तव
संरक्षक, "**नव किरण**" मासिक ई पत्रिका

संपादक की कलम से...

नमस्कार...
हमारा देश और पूरी दुनिया वर्तमान में कोरोना की दहशत से घिरी हुई है, अमीर गरीब बच्चे युवा बुजुर्ग सभी लोग सहमे हुए हैं, सबसे अधिक गरीब तबके, दिहाड़ी मजदूर व कामगार इस समय आर्थिक स्थिति से कमजोर पड़ गए हैं। फिर भी डॉक्टर, नर्सेज,सरकार, प्रशासन, मीडिया कर्मी, सामाजिक कार्यकर्ता व हजारों लोग परोक्ष व अपरोक्ष रूप से इस अचानक आई गंभीर समस्या के समाधान व सहायता हेतु तत्पर हैं।
ऐसे समय में हम साहित्यकार भी अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं, साहित्य के माध्यम से आम जन मानस में जागरूकता फैला रहे हैं। साहित्य समाज का दर्पण होता है, प्राचीन काल से वर्तमान समय तक साहित्यकार समाज को नई दिशा और दशा देते आ रहे हैं। साहित्य का सृजन जितना ही जरूरी होता है उतना ही साहित्य का प्रचार प्रसार भी आवश्यक है। इसी उद्देश्य के साथ हमने "नव किरण" मासिक ई पत्रिका को निकालने का निर्णय लिया है। जिस तरह प्रातः काल होते ही धरा पर सूर्य के नव किरणों का आगमन होते ही तिमिर छंट जाता है, चारों ओर प्रकाश फैल जाता है, मन में नई आशा नई ऊर्जा का संचार होने लगता है उसी तरह ही साहित्य में "**नव किरण**" पत्रिका के द्वारा एक नव पथ आलोकित होगा, इसका पूर्ण भरोसा है।
"**नव किरण**" का प्रवेशांक मई 2020 माँ शारदे को वंदन व मात पिता को समर्पित करते हुए व आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्षानुभूति हो रही है। इसमें वरिष्ठ साहित्यकारों के साथ नवांकुरों की रचना का प्रकाशन किया गया है। साहित्य के क्षेत्र में "**नव किरण**" के यात्रा का जो बीड़ा हमने उठाया है उसमें आप सुधि पाठकों व साहित्यकारों का सहयोग व पूर्ण समर्थन अवश्य मिलेगा ऐसा मुझे विश्वास है।
पत्रिका को महत्वपूर्ण बनाने में **संरक्षक अग्रज विजय श्रीवास्तव जी**, जो अच्छे साहित्यकार के साथ अच्छे दिग्दर्शक भी है, की बड़ी भूमिका है। पत्रिका

के **समीक्षक बड़े भाई डॉ अरविन्द कुमार श्रीवास्तव 'असीम' जी** का बेहद आभार जिन्होंने रचना चयन व समीक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साथ ही पत्रिका के उप संपादक **डॉ अजय कुमार जी** का महत्वपूर्ण योगदान है। पत्रिका के प्रकाशन में एक विशिष्ट भूमिका **शोभित जी** की है, जिनके बिना पत्रिका का प्रकाशन संभव नही था।

अंत में पत्रिका के प्रवेशांक मई 2020 में प्रकाशित सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई। पत्रिका में उत्कृष्ट व स्तरीय कविताओं, गीतों, ग़ज़लों, नवगीतों और लघुकथाओं का समावेश किया गया है। पत्रिका में कई साहित्यिक मंच व ग्रुप से पुरुस्कृत रचनाएँ भी ली गई हैं व आगे भी शामिल की जाती रहेंगी। जिसमें मेरे द्वारा संचालित "**नव किरण साहित्य साधना मंच**" भी है। जून माह 2020 से पत्रिका में कहानी विधा को भी प्रकाशित किए जाने पर विचार है। साथ ही बाल रचनाओं को एक अलग कालम "**बाल संसार**" में रखा गया है। सभी रचनाकारों को व पत्रिका से जुड़े सभी लोगों को हार्दिक आभार। आगे भी आप सभी का सहयोग व योगदान मिलता रहेगा।

आप सभी इस वर्तमान परिस्थितियों में घर पर रह कर पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं का आनंद लें।

पत्रिका को बेहतर बनाने के सुझाव की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
संपादक
"**नव किरण**" मासिक ई पत्रिका
बस्ती [उत्तर प्रदेश]
मोबाइल 7355309428

दिनांक: 01.05.2020

हाँ, मैं हूँ एक मजदूर...

चंद सिक्कों के लिए...
सर पर उठाता हूँ बोझा...
ढोता हूँ गारा मिट्टी..
छेनी हथौड़ी गर्म भट्टी..
जा जाने क्या क्या करता हूँ...
पेट की आग बुझाने को..
दुत्कार सहन कर जाने को..
हो जाता हूँ मजबूर..
हाँ, मैं हूँ एक मजदूर...

आँधी चले या आए तूफ़ान..
आग का गोला बरसाए भगवान..
जेठ की दुपहरी या..
शीत लहर में कटकटाते होंठ..
चंद रुपयों के लिए..
समय से हाजिर हूँ हुजुर..
हाँ, मैं हूँ एक मजदूर...

जरा सी गलती पर खाऊं डांट..
घर में टूटी हुई है खाट..
श्रमिक दिवस को मेरे भी ठाट..
सिर्फ पहली मई को..
सब की नज़रों में..
लगता मैं हूँ कोहिनूर...
हाँ, मैं हूँ एक मजदूर...

नित किस्मत पर रोता..
न मिले मजदूरी, न मिले काम..
भूखे पेट न होता आराम..
बड़ी बड़ी इमारतों को..
खड़ा मैं करता..
बड़े सेतु मैं निर्मित करता..
चंद सिक्कों के अलावा..
कहीं न होता मेरा नाम..
बस! दिहाड़ी मजदूर के रूप
में..
मैं जरूर हूँ मशहूर...
हाँ, मैं हूँ एक मजदूर...

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
संपादक, "नव किरण" मासिक ई पत्रिका

सबके लिए सदैव ही
शुभ उच्चारण कीजिए..

सबके लिए सदैव ही शुभ शुभ, उच्चारण कीजिए,
जो निराश व दुःखी हैं, उन्हें भी शुभ संकेत दीजिए।
जिस पर हम करते हैं विश्वास, वह विश्वास लौटाएगा,
यदि कोई बोले अशुभ वचन, क्षोभ न प्रगट कीजिए।।

मनुज से जब हो जाए गलती, हम उसे सजा हैं देते,
जब कोई अच्छा करे, प्रशंसा में हम कृपण हैं बनते।
मन और मस्तिष्क अच्छे में लगाएं, सर्वत्र हो भलाई,
दूजे के दोषों में चिंतन मनन से ख़ुद में होती बुराई।।

सदा उन्नति व प्रगति के लिए, कदम उठाने चाहिए,
भाग्य के ही भरोसे बैठने से, दीन हीन होते जाइए।
विषम परिस्थितियों में भी जुझारू प्रवृत्ति हो हमारी,
यदि किन्तु परन्तु के लिए, कदापि न स्थान बनाइए।।

सभी के जीवन में भाग्य चमकने का मौका है आता,
दूरदर्शी होता जो मनुज, अवसर कभी नहीं गवांता।
मौके को पकड़ कर फ़ायदा उठाना यदि हम सीख लें,
ऐसे व्यक्ति के भाग्य का सितारा, सदैव चमक जाता।।

ज्ञान के मार्ग में अमीर गरीब, होते हैं सदा ही समान,
सच्चे लगन व अध्ययन से, बन जाते हैं हम विद्वान।
स्वाध्याय में आलस्य का, कभी स्थान न ही बनने दें,
ज्ञान को धारण करने से सच्चे अर्थों में बनते इंसान।।

ज्ञान के ज्योति पुंज से हम सुख का है अनुभव करते,
दुःख भी आते जीवन में, तो उसको हँस कर सह लेते।
जो सुशिक्षित, समुन्नत व हर प्रकार से होते हैं सतर्क,
जीवन में ऐसे मनुष्य इतिहास में नाम को दर्ज करते।।

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
संपादक, "नव किरण" मासिक ई पत्रिका

संस्कृति व संस्कार के बीज..

संस्कृति व संस्कार के बीज..
अब हम रोपना भूलते ही रहे..
पाखंड, झूठ, नफ़रत, घृणा..
ही सर्वत्र पुष्प पल्लवित हो रहे..
हमारी पुरातन संस्कृति व सभ्यता..
का होता जा रहा हनन..
पर हमें फ़र्क न पड़ रहा है..
हम न कर रहें..
आत्मचिंतन व मनन..
जिसका परिणाम है..
न हो रहा है यथार्थ या सत्यार्थ..
का अब कहीं भी प्रस्फुटन..
अब तो सारे संबंध..
सिर्फ निहित स्वार्थ में ही..
लिखे जा रहे हैं..
उन्हीं का कर रहे हम अनुबंध..
कमजोर, बेबस, शोषित, पीड़ित..
या हो कोई लाचार..
नहीं होता है उपचार..
जिसके पीछे बस!
एक ही सत्य है..
प्रजातियों की तरह..
विलुप्त होता जा रहा है..
संस्कृति व संस्कार..
बढ़ने का हो रहा व्यापार..
सम्बन्धों का गला रेत कर..
प्रसिद्धि की बयार..
सुख दुःख हँसी आँसू..
का न रहा अब मोल..
धन दौलत का ही बस! भूगोल..
अभी भी समय है..
हमें बीज बोना होगा..
संस्कृति व संस्कार का..
तभी होगा कुछ चमत्कार..
हम में होगा..
इंसानियत का किरदार...

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
बस्ती [उत्तर प्रदेश]
संपादक, "नव किरण" मासिक ई पत्रिका

रिश्ते मर रहे हैं..

रिश्ते मर रहे हैं..
रिश्ते खोते जा रहे है प्रतिमान..
स्वार्थ सिद्धि का चारों तरफ..
मचा हुआ है घमासान..
अब रिश्तों को जीना न रहा आसान..
सौंदर्य बोध वो रिश्तों में प्यार..
वो मनुहार वो दुलार..
जैसे आयाम नहीं मिल रहे हैं..
लूट खसोट चारों तरफ हाहाकार..
हर तरफ बस अत्याचार..
रिश्ते हाफ रहे हैं..
रिश्तों के नित मुहावरे गढ़े जा रहे हैं..
रिश्तों की धरा हो रही है ऊसर..
अब न हो पा रही उर्वर..
रिश्तों में मिठास हो चुकी गायब..
सम्प्रदायिकता, रिश्वत, भ्रष्टाचार..
हर जगह कालाबाजार..
जैसे शब्दों के बीच..
पिसते जा रहे हैं रिश्ते नाते..
सच में रिश्ते निभाने न रहे आसान..
रिश्तों को बचाना है..
उन्हें अपनाना है..
हमारी जिम्मेदारी..
न लगने पाए ऐसी कोई बीमारी..
रिश्तों की आत्मा न मर जाए..
शरीर लहूलुहान न हो जाए..
रिश्तों को देने होंगे नए प्रतिमान..
तभी बचेंगे रिश्तों के प्रान..
रिश्तों को मिल सकेगा जीवन दान..
तभी बचेगी रिश्तों की पहचान..

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
बस्ती [उत्तर प्रदेश]
संपादक, "नव किरण"
मासिक ई पत्रिका

मृत्यु को पछाड़ दूँगा

जब जीवित रहने के..
सभी विकल्प हो जाएंगे खत्म..
तब भी न मैं हिम्मत हारूँगा..
मृत्यु को ललकारूँगा..
पूरे अपने तन मन की शक्ति लगा..
मृत्यु के विरुद्ध..
खड़ा हो जाऊँगा..
ख़ूब टकराऊँगा..
लड़ने के जितने भी..
आते हैं मुझे तरीके..
सब को आजमाऊँगा..
क्योंकि मैं मनुष्य हूँ...

एक बार तो निश्चित ही..
मृत्यु को पीछे ढकेल दूँगा..
उसे भी मजबूर होना पड़ेगा..
उसे भी सोचना पड़ेगा..
हो सकता है कि मृत्यु को..
मैं परास्त ही कर दूँ..
उसे पटखनी ही दे दूँ..
मृत्यु को मैं भी जीत लूँ..
आखिर मैं मनुष्य हूँ...

मेरे ही रूप में तो..
ईश्वर ने भी अवतार लिया है..
दनुजों का दमन किया है..
इसीलिए मैं शक्तिशाली हूँ..
मैं निश्चित ही बलशाली हूँ..
मैं मृत्यु को भी दूँगा पछाड़..
मेरे साँसों को न पाएगा उखाड़..
पूरी ताकत से करूँगा चिंघाड़..
मृत्यु को भी हरा दूँगा..
भगने पर मजबूर कर दूँगा..
क्योंकि मैं मनुष्य हूँ....

प्रिय पाठक गण

यह शाश्वत सत्य है कि समाज को सही दिशा देने में साहित्य की अहम भूमिका रही है। साहित्य के रस में सराबोर करने आप लोगों के सामने यह पत्रिका 'नव किरण' अपने प्रवेशांक के साथ यात्रा पर निकल पड़ी है। एक तरफ यह पत्रिका सुधि लेखकों एवं कवियों को अपनी रचनाओं को प्रकाशित कराने की सुविधा उपलब्ध कराएगी तो दूसरी ओर जनमानस के भावनाओं और आकांक्षाओं को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने में सहायता प्रदान करेंगी। आशा करता हूं कि संकलित कविता, ग़ज़ल, कहानी, इत्यादि आपको पसंद आएगी। यह पत्रिका अपने प्रतिबद्धताओं के साथ यात्रा पर अग्रसर रहेगी और समाज में सकारात्मक बदलाव में अहम भूमिका निभाएंगी।।

डॉ अजय कुमार
उप संपादक, "**नव किरण**" मासिक ई पत्रिका
अंग्रेजी विभाग, पटना कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना

ग़ज़ल

हर 'आहट' पर कान लगाकर बैठा हूं
इस बेचैनी का कभी 'हिसाब' तो पूछो ।।

बेचैन निगाहें किस कदर ढूंढ रही है तुमको
नज़र मिलाकर कभी इस नज़र से तो पूछो ।।

ख्वा़बों में ही नहीं ख्यालों में भी गहरी हो तुम
तनहाई में कभी अपने 'ख़यालात' से तो पूछो ।।

कुछ तो है सफ़र में..यूं हीं नहीं मिलें हैं हम दोनों
आखिर क्या है कभी अपने जज़्बात से तो पूछो ।।

सहेज रहा हूं मैं यहां हर एक पल के एहसासों को
तुमको भी है ख़बर कभी 'मुलाकात' से तो पूछो।।

चांद को डूबने नहीं दूंगा

जीवन की..
उठती - गिरती लहरों के बीच
सांसों को थकने नहीं दूंगा।।
चल पड़ा हूं..
चलता ही रहूंगा इस पथ पर
गर्दिशों में भी..
कदम को कभी थमने नहीं दूंगा।।
माना कि...
आसान नहीं है राह-ए-उल्फ़त
जो भी हो...
इस प्रणय रथ को रुकने नहीं दूंगा।।
मुद्दतों बाद उतरा है चांद
मेरे दिल के आंगन में इस तरह
कर लिया है..
बाहें मजबूत और कंधे चौड़े
अब मैं इसे हरगिज़ डूबने नहीं दूंगा।।

डॉ अजय कुमार
पटना, बिहार
उप संपादक,
"**नव किरण**" मासिक ई पत्रिका

माह जून अंक के लिए रचनाएँ आमंत्रित हैं

पत्रिका के जून 2020 अंक के लिए
अपनी सिर्फ एक उत्कृष्ट रचना भेज सकते हैं।

{चूंकि कई साहित्यिक ग्रुप या मंच से प्रतियोगिता में
पुरस्कृत रचनाओं को लिया जाता है}

रचना भेजने के लिए अति आवश्यक है-

1. पद्य विधा, लघुकथा या कहानी *[कहानी या लघुकथा छोटी होने पर ही प्रकाशित होगी]*
2. बाल {**कविता**, **लघुकथा** या **कहानी** } रचना भी भेज सकते हैं।
3. रचना **स्वरचित**, **मौलिक** व **अप्रकाशित** हो।
4. रचना भेजते समय रचना का **शीर्षक**, रचनाकार का **नाम**, **पूर्ण पता**, **मोबाइल नं** व **ईमेल** व **फोटो** हो।
5. यह लिखना आवश्यक है कि

   "नव किरण" मासिक ई पत्रिका के लिए भेजी जा रही रचना मेरी स्वरचित, मौलिक व अप्रकाशित है।इसमें कॉपीराइट का उल्लंघन नहीं है।
6. रचना {**पद्य विधा**, **लघुकथा** या **कहानी**} **बड़ी** न हो।
7. रचना स्वीकार करने की अंतिम तिथि **20 मई 2020** है।
8. इसके बाद भेजी गई रचना अपने आप अस्वीकृत होगी।
9. रचना निम्न पते पर भेजें-

व्हाट्सएप **7355309428**

या

ईमेल **laldevendra706@gmail.com**

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
संपादक "नव किरण" मासिक ई पत्रिका

जगह-जगह पथराव

मेरा शहर रात दिन जीता
लेकर कलह- तनाव
जगह-जगह पर शोर-शराबा
जगह-जगह पथराव
भिन्न-भिन्न वस्त्रों में देखे
धर्मों के अनुयायी
शांति दया करुणा की भाषा
जिनको समझ ना आई
अंधकार के परिपोषक
कट्टर शिक्षा का बड़ा प्रभाव।
राजनीति के दांव पेच
हम कभी समझ ना पाए
छत दीवालों पर जा बैठी
मन ही मन इतराए
दरवाजों का घर आंगन से
बदल गया बर्ताव।
भीड़ कहर बन करके टूटी
हिंसा का तांडव है
निरपराध को बचा सके जो
वह ताकत गायब है
सुस्त पुलिस वालों ने आकर
डाला वहां पड़ाव।
मेरा शहर...

डॉ अरविंद श्रीवास्तव 'असीम'
दतिया (मध्य प्रदेश)

ग़ज़ल

जिसे लोग शाम ओ सहर देखते है।
मशक्कत खरी दोपहर देखते है।

वो जिसकी जुबां मे नहीं है नफ़ासत,
जुबां से निकलता ज़हर देखते हैं।

सुना है उजड़ने लगे है घरौंदें।
शबो-शाम बिकते शहर देखते हैं।

सुख़नवर बनाने की साज़िश हुई है।
कहां आजकल सब बहर देखते हैं।

करो रात-दिन इक तो मंजिल मिलेगी।
हैं जिंदा जो'वो ही ज़िगर देखते हैं।

गुनहगार खुर्शीद को क्यूँ बनाएँ।
हमीं रोज़ कटते शजर देखते हैं।

यहाँ रंग झंडों का प्यादा बना है ।
सियासत की उखडी डगर देखते है।

अनिल श्रीवास्तव "अयान"
सतना, मध्य प्रदेश

अगवानी

सुनो दोस्त!
क्या सूरज
सवालों का जवाब देता है
और चांद की टकटकी का
कोई अर्थ होता है
हवा कभी किसी
अवसर की
तलाश में होती है
ओर बून्द दिलाना चाहती है
प्यार का अहसास
सुखी पत्तियां बीन लेना चाहती है
हमारा दुःख

बरसों बाद
दिल की जमीन पर
महसूस हुआ
आत्म संतोष
एक बार फिर लहराया सागर
आशाओं का
सूरज, चाँद, हवा, लहरों की
भाषा को पढ़ पाना भी
कितना अजीब है

सागर की खामोशी में भी
एक अधूरापन है
हम समझ न सके
ये ओर बात है

धरती की सुगबुगाहट
लहरों का कम्पन बन
चहक उठती है
दिल के दर्पण में

पत्थरों में सोई
चुप्पी और आवाज़
क्षितिज के हृदय पर
दस्तक देती है
तब लगता है
ओस बुन्द का संकल्प जल
वैतरणी बन
प्रवाहित होने लगता है
और सुखी पत्तियां
गुनगुनाती है
टूटकर ही तो
युग के साथ जीने का
साहस कर सकी हूँ

समय का सूरज
अपने हाथों को हिलाकर
हर सवाल का जवाब देता
अपने अस्तित्व का
बोध कराता है
और हवा के साथ
निकल पड़ता है मन
नई सुबह की अगवानी में।

राजकुमार जैन राजन
चित्रा प्रकाशन
आकोला (चित्तौड़गढ़) राजस्थान

आशा

हमको तुमसे,तुमको उनसे मिली दिलासा है,
आशा केवल शब्द नहीं,अंतर की भाषा है।
नैराश्यता का अंधियारा हो,चाहे कितना ही,
अंतर्मन का दीप प्रकाशित है, तो आशा है।।

लुट जाना सर्वस्व अगर अपने जीवन में हो,
और समर्पण घुल-मिल जाने का इस मन में हो।
अगर कहीं तिनका मिल जाए, तनिक ज़रा सा भी,
अंतर्मन का दीप प्रकाशित है तो आशा है।।

संकट में मत घबराना, संकट कट जाता है,
सुख बांटा तो आपस में दुःख भी बंट जाता है।
दुःख में सुमिरन करें सभी,ये सत्य खरा सा है,
अंतर्मन का दीप प्रकाशित है तो आशा है।।

सब कुछ कभी नहीं मिटता है,कुछ बच जाता है,
कठिन-समय में समस्याओं का घन फट जाता है।
सारे द्वार बंद होते तो,एक खुल जाता है,
अंतर्मन का दीप प्रकाशित है तो आशा है।।

डॉ गोपेश वाजपेयी
भोपाल, मध्यप्रदेश

हौसला बस चाहिये

गर समस्या है गिरि तो हम यहाँ गिरिराज है,
मुँह बायें है खड़ी जो सामने हम आग हैं,
हौसला जो है हमारा हम तो अब सरताज हैं,
क्या है अब औकात तेरी हम तेरे यमराज हैं।

बुद्धि और विवेक से हम तुंमको देंगे यूँ पटक,
जिस गली में तुम रहोगे उसको सिरे से झटक,
तुमने मानव का अकूत ताक़त न देखा आजतक,
खत्म हो जायेगा ये तेरा वजूद अब ख़ाक तक।

जीतना है जीतने का हौसला बस चाहिये,
जंग क्यों न हो कठिन बस हौसला तो चाहिये,
मन मत कर लो उदास फिर हौसला तो चाहिये,
जीतने को है जरूरी हौसला बस चाहिये।

स्नेहलता द्विवेदी "आर्या"
कटिहार, बिहार

कि अभी ज़िन्दा हूँ मैं

मेरी रगों में कुछ बह रहा है
उसे कटोरा भर-भर निकालो
चूल्हे पर चाय की तरह चढाओ
गरम करो, उबालो
बहुत ज़्यादा ठण्ड बैठ गयी है ज़हन में

जिस्म को भी तपाओ
बिना गिने कोड़े बरसाओ
हो सकता है मैं जाग जाऊं
अपने होश में आ जाऊं

बहुत कंपकंपी छूट रही है
दाँत किटकिटा रहे हैं
कोई आवाज़ ठीक से नहीं निकल रही
है

मेरी जीभ को निकालो
और तवे पर रोटी की तरह सेंको

मेरे कानों में बिगुल फूंको
आस-पास की चीखें मुझे
आजकल ठीक से सुनाई नहीं देतीं
किसी की हथेली में ताप है तो
रसीद कर दो इसे मेरी कनपटी पर

एक लाश मेरे बहुत क़रीब आके
फुसफुसा रही है
कि मर गया हूँ मैं
मुझे जलाने और जलाकर भुलाने से
पहले
एक आख़िरी कोशिश करो
शायद किसी को यकीन आ जाये
कि अभी ज़िन्दा हूँ मैं।

राहुल कुमार बोयल
झुंझनूं राजस्थान

जंजीरे

कुछ जंजीरे ...
लोहे सी कड़ी ...
आसमाँ से बड़ी !!
बँधे मन ,निकलती आहें ..
रक्त रंजित पैरों पे पड़ी !!
कुछ जंजीरें ...लोहे से कड़ी !!

रात के अंधेरे में ...
कुछ ने तोड़ी जंजीरे ...
नाकाम रहे ,,पकड़े गए !
लोग आए ,भीड़ हुई ..
दुःसाहस !! इन्हें काटने का !!
अरे!!ये आम नही खास है ,
जीवन भर की त्रास है !
चाहो भी तो मुक्त न हो पाओगे
जहाँ गए ,,इससे ही युक्त हो जाआगे..
मानवता देखते रही खड़ी खड़ी !!
कुछ जंजीरे भावनाओ से बड़ी !!
रक्त रंजित पैरों पे पड़ी !

जाना... तब कि.. ये विलक्षण है ...
धर्म, नियमो और संस्कारों से बनी..
इसे काटना तो कुलक्षण है !!
छूट भी गए तो ,नींद नही आएगी ,,,
संस्कार... दिमाग से उतर ..
पेट की आंतों में कुलबुलायेंगी ....
इन्हें खुराक की जरूरत है,,
खुद को मार कर,, खिलाने की
जरूरत है !!
खून पीती,, मजबूत होती बेड़ियां!!

जल गए शरीर पर ,, आत्मा पर बंधी,,
कुछ बेड़ियाँ
लोहे सी कड़ी,, आसमां से बड़ी!!
रक्त रंजित,, पैरों पे पड़ी !!

सुधा शर्मा 'कोयल'
रायपुर, छत्तीसगढ़

करें हम सब जन शुभ संकल्प

कर्म अगणित हैं जीवन अल्प!
करें हम सब जन शुभ संकल्प!

करें कुछ पर हित के भी कर्म!
यही तो कहता है हर धर्म!
सुनें अपने अंतर की बात,
नित्य इंगित करता है मर्म!

मनुजता का कुछ नहीं विकल्प!
करें हम सब जन शुभ संकल्प!

मनुज-सक्रियता है अनिवार्य!
कथन से उत्तम होता कार्य!
क्लांति है जड़ता की सूचक,
व्यस्तता प्रकृति को स्वीकार्य!

करें सब विश्रामों को अल्प!
करें हम सब जन शुभ संकल्प

गेह में भी संभव है योग!
दूर इससे रहते हैं रोग!
सुलभ साधन कितने ही,
रहे मर्यादा में उपभोग!

करें अपनी आवश्यकता अल्प!
करें हम सब जन शुभ संकल्प !

संतुलित-सीमित हों संवाद!
निरर्थक हो न वाद-विवाद!
निरन्तर शैली हो शालीन,
नहीं हो शब्दों में उन्माद!

व्यर्थ है मर्यादाधिक जल्प!
करें हम सब जन शुभ संकल्प!

रशीद अहमद शेख़ 'रशीद'
सेवा निवृत्त प्राचार्य,
इन्दौर (म• प्र•)

त्याग कर चिंतन, न कोई, जटिल प्रण करना कभी

वेदना संकल्प की ,
मन में न तुम भरना कभी ।
त्याग कर चिंतन,न कोई,
जटिल प्रण करना कभी ।

प्रण किया था कर्ण ने भी,
और अटल उस पर रहा ।
निज कवच का दान देकर,
मृत्यु को बढ़कर गहा ।
मूक होकर रह गया प्रण,
और.. विधि-विधना कभी ।
त्याग कर चिंतन, न कोई,
जटिल प्रण करना कभी ।

सीय के पाणिग्रहण हित,
प्रण किया मिथलेश ने ।
पर न अजगव जब हिला,
क्रंदन.. किया... राजेश ने ।
वह विवशता.. बुद्धि में प्रिय,
तुम नहीं भरना कभी।
त्याग कर चिंतन, न कोई ,
जटिल प्रण करना कभी ।

कर सको तो तुम करो प्रण,
धरणि के शृंगार का।
या हृदय से, दमन हित.. प्रण,
स्वार्थ के अंगार का ।
मनुज हो,अंतस न अपने,
दनुजता भरना कभी ।
त्याग कर चिंतन, न कोई,
जटिल प्रण करना कभी ।

अनुपम आलोक
बांगरमऊ, उन्नाव

नवगीत : सब रिश्ते-नाते

संबंधों के मधुर गीत
आखिर कैसे गाते।
बहुत पास से देख लिए हैं
सब रिश्ते-नाते।

जिससे की उम्मीद
कि मुझसे पूछे मेरा हाल।
जब करीब से गुजरा
उसकी तेज हो गई चाल।

हम अपने मन की मजबूरी
किसको समझाते।

अपना मतलब हल होने तक
बिछे रहे जो लोग।
सीना ताने खड़े हुए हैं
यह कैसा सँयोग।

ज़हर भरी मुस्कान
फैंकते हैं आते-जाते।
अपनी-2 पड़ी सभी को
खुलकर कौन मिले।
झुँझलाहट है हर चेहरे पर
झेले नहीं झिले।
हिम्मत होती नहीं
कि खोलूँ और नए खाते।

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
आयुध निर्माणी नालन्दा
राजगीर (बिहार)

कोयल

एक कोयल
मेरे अंदर भी है
जो अकसर कूका करती है
मन की डालियों पर
चहका करती है
प्रेम की गलियारों पर
और तब प्रतिध्वनित है
दसों दिशाएं
खुल जाते हैं
कलुषित कपाट
बहने लगती है
मधुर बयार।

हां! एक कोयल मेरे अंदर भी है
जो, विरह गीत भी गाया करती है
बदलते हैं मौसम
बदलते हैं रिश्ते
बदलता है प्यार
और तब सिसकती है धरा
प्रकृति करती है प्रहार
कुछ सीखाने के लिए
कुछ समझाने के लिए
एक संतुलन
बनाने के लिए
अपनी कोयल और उसकी कूक में।

सारिका भूषण

मैं तुझमें हूँ

मुझे फ़िजाओं में
कभी भी ढूँढो ना
मैं तुझमें हूँ कहीं
मुझे खुद में ढूँढो ना।
जानना चाहते हो मुझे
परखना भी चाहते हो
समझना चाहते हो मुझे
पढ़ना भी चाहते हो,तो
अपना अंतर्मन पढ़ लो ना
मैं तुझमें हूँ कहीं
मुझे खुद में ढूँढो ना।
मैं मिलूँगी महलो में
सड़कों पर और
झोपड़ियों में
हर किसी में मौजूद हूँ
किसी-न-किसी विधा में
अमीर-गरीब,हिन्दू-मुस्लिम
सिख-ईसाई
सर्वधर्मों में हूँ
तुम गुणवान,संस्कारवान हो
तो मैं तेरे सदकर्मों में हूँ
मुझे इधर-उधर दूजे में
कभी भी ढूँढो ना
मैं तुझमें हूँ कहीं
मुझे खुद में ढूँढो ना।

प्रतिभा प्रियांशी
पूर्णियाँ(बिहार)

बेटा जन्मा

मेरे यहां बेटा जन्मा
खुशियां मनाई
मिठाइयां खाई
वंशवर्धक आया
कुलदीपक आया

पढ़ेगा लिखेगा
बड़ा आदमी बनेगा
सेवा करेगा
बुढ़ापे की लाठी बनेगा

फिर शादी होगी
किस की शादी होगी?
इससे होगी,उस से होगी!
लेकिन किस से होगी?

पच्चीस बरस बाद
क्या ऐसा होगा!
नहीं कदापि नहीं
ऐसा नहीं होगा

कन्याएं मर रही है
जन्म लेने से पहले
और हम देख रहे हैं
कैसे सपने सुनहले

हां शादी नहीं होगी
बेटा कुवांरा ही रहेगा
क्योंकि बात सीधी है
कन्याओं का टोटा रहेगा

बेटा होने पर मुझे कौनसी
बादशाहत मिल जाएगी
और बेटी होने पर कौनसी
बादशाहत छिन जाएगी

हर एक जोड़ा स्त्री पुरुष का
है अनुपात पचास पचास
फिर व्यर्थ में हम क्यों करें
केवल बेटों की ही आस?

तरुण कुमार दाधीच
उदयपुर(राज)

"नव किरण" के शुभारम्भ के अवसर पर

नव किरण आई,
उजियारा साथ-साथ लाई।
पूर्वांचल की माटी की सौगात साथ लाई।।
नव किरण आई..................

लेख, कहानी, कविताओं ने,
मन को मोह लिया।
एक नया विश्वास दिला ,
उर को संतोष दिया।
प्रथम अंक से इसने अपनी,
सब में धाक जमाई।
नव किरण आई............ ....

स्वस्थ मनोरंजन प्रदान कर,
ज्ञान बढ़ाती है।
नीरसता को भगा,
हास-परिहास कराती है।
शिक्षाप्रद बातों का यह,
भण्डार साथ लाई।
नव किरण आई..................

उच्चकोटि की अगणित रचना,
इसकी शान बढ़ाये।
पत्र-पत्रिकाओं की श्रेणी में,
यह नाम कमाये ।
लब्ध प्रतिष्ठित कृतिकारों ने,
इसकी द्युति चमकाई।
नव किरण आई...............

सुंदर सा मुखपृष्ठ,
कलेवर इसका सुखदायी हो।
प्रवेशांक साहित्य जगत में,
इसका शुभदायी हो।
कृतियों से यह कीर्ति बढ़ाये,
फूली नहीं समाये।
नव किरण आई..................

नित नूतन स्तम्भों से,
मोती,माणिक बिखरायें।
संपादन से जुड़े सुधीजन,
श्रम का प्रतिफल पायें।
जन-जन को आकर्षित करने,
अपना कदम बढ़ाई।
नव किरण आई..................

ओम प्रकाश खरे
विशेषरपुर, जौनपुर (उ०प्र०)

तुम्हें ग़ज़ल कहूं या गीत

बोलो बोलो मेरे मीत
तुम्हें ग़ज़ल कहूं या गीत
बोलो बोलो मेरे मीत
तुम नज्म हो भोली भाली
तुम हो रुबाई निराली
तेरा अंग अंग है मिसरा
जां तुम हो क़ता सी लाली
तेरा यौवन है संगीत
तुम्हें ग़ज़ल कहूं या गीत
तुम हो गुलों सी अंजुमन
हो फूलों जैसी गुलबदन
शरमा जाये माहताब
तुम कुदरत की रूख़े रौशन
है तुमसे पाकी़जा़ प्रीति
तुम्हें ग़ज़ल कहूं या गीत
कलि सा तेरा हुस्नो जमाल
कहीं मिली न ऐसी मिसाल
देख के तूफां बदले रुख़
वाह तेरा जा - हो जलाल
तेरी दरिया सी है रीति
तुम्हें ग़ज़ल कहूं या गीत

भास्कर सिंह माणिक
जालौन ,उत्तर प्रदेश,

प्रेम

प्रेम अराधना, प्रेम ही पूजा,
प्रेम आत्मा की पुकार है।
प्रेम से बड़ा न कोई दूजा,
प्रेम तो ईश्वरीय उपहार है।
प्रेम कर्म है, प्रेम ही मर्म,
प्रेम धर्म का प्राण- सार है।
प्रेम गर दिल में हो सबके,
तो हर जन एक अवतार है।
प्रेम रिश्ता, प्रेम ही से नाता,
प्रेम से ही सुखी परिवार है।
धन दौलत, प्रतिष्ठा से बड़ा,
इस दुनिया में आज प्यार है।
प्रेम न बिकता बाजारों में,
रत्न बड़ा यह अनमोल है।
इसके बिना जीवन अधुरा,
प्रेम सुधा का एक घोल है।
प्रेम शक्ति, प्रेम ही भक्ति,
प्रेम विश्वास का आधार है।
प्रेम बिना परमेश्वर न मिले,
प्रेम बिना खत्म संसार है।
प्रेम गीता, प्रेम ही कुरान,
प्रेम बाईबल का सार है।
प्रेम से ही ये दुनिया टिकी,
प्रेम बिना जीवन बेकार है।
प्रेम की न होती कोई सीमा,
ना कोई उम्र का बंधन है।
ढाई आखर जो समझ ले,
करता उसका जग वंदन है।

कृष्ण कुमार कश्यप
गरियाबन्द- छत्तीसगढ़

वह सुबह कभी तो आएगी

कब सोचा था फ़ूलो ने,
धूमिल हो जाएंगे वो इक दिन ।
कब सोचा था कलियों ने,
मसली जायेंगी वो इक दिन।
कब सोचा था शाखों ने ,
सूख पड़ेंगी वो इक दिन।
कब सोचा था बगिया ने ,
इकली पड़ जायेगी वो इक दिन ।
कब सोचा था मलिया ने ,
उजड़ेगा उसका प्यारा चमन।
नन्हा सा दिल "सक्षम" उसका,
बिलख पड़ा था वो इक दिन।
करता है प्रश्न ,

बोल मेरे मालिक! मेरे परवरदिगार!
तू तो है सबका पालनहार,
कब आएगी चमन में बहार?
कब लौटेगा बासंती खुमार ?
जब फूल खिलखिलायेंगे,
जब वृक्ष भी इतरायेंगे,
और डाली ,पत्ती झूमेगी उन्माद से
हंसते खिलते पुष्पों की सुवास से
फिर भी उम्मीद का दामन
पकड़े है बागवां।
आशा की किरण सँजोये है बागवां।
वह सुबह कभी तो आएगी ।
वह सुबह कभी तो आएगी।

श्रीमति गायत्री ठाकुर
सेवानिवृत्त शिक्षिका
नरसिंहपुर

प्रतिशोध

होता है भयावह प्रतिशोध का परिणाम प्रिय,
प्रतिशोध की अग्नि से जल जाते आवाम प्रिय।

प्रतिशोध के बीज को उर -भू में न करो अंकुरित,
हृदय के उपवन को रखो आत्मीयता से सुगन्धित।

प्रतिशोध से मानवजाति का होता है सर्वनाश प्रिय,
प्रतिशोध के विष से कितने ही रिश्ते निःश्वास प्रिय।

प्रतिशोध रहित होकर जीवन बनाओ सफल अपना,
हो गंगा सा चित पावन, हृदय बनाओ धवल अपना।

प्रतिशोध की ज्वाला में सर्वस्व होता है ख़ाक प्रिय,
टूट जाते हैं प्रतिशोध से अटूट बंधन पाक प्रिय।

प्रतिशोध संकुचित सोच को दर्शाता है सदा,
पर पीड़ा देख इसमें मनुज हर्षाता है सदा।

सोचने समझने की शक्ति हो जाती है क्षीण प्रिय,
प्रतिशोध रहित होकर होगा विकास सर्वांगीण प्रिय।

होता है भयावह प्रतिशोध का परिणाम प्रिय,
प्रतिशोध की अग्नि से जल जाते आवाम प्रिय।

प्रीति चौधरी (मनोरमा)
बुलन्दशहर, उत्तरप्रदेश

मैं पीपल हूँ

हाँ! मैं वृक्षों में वृक्ष पीपल हूँ,
मैं अश्वत्थ हूँ, मैं देव वृक्ष हूँ।

सामान्य सा अस्तित्व मेरा
लेकिन सब पर भारी हूँ।
नहीं चाहिए सुंदर क्यारी
नहीं चाहिए खाद और पानी
नहीं चाहिए बाग- बगीचा
इंतजार नहीं किसी मौसम का,
हर मौसम को अपनाता हूँ
देकर अपनी प्राण- वायु
जग को सजीव बनाता हूँ।
हाँ ! मैं वृक्षों में वृक्ष पीपल हूँ,
मैं अश्वत्थ हूँ, मैं देव वृक्ष हूँ।

बैठकर मेरी सुखद छाया में
पथिक मुग्ध हो जाता है,
सुगंधित सुरभित पवित्र वायु का
भरपूर आनंद उठाता है।
सात्विक स्पर्श से अंत: चेतना प्रस्फुटित हो प्रफुल्लित होती है,
श्री हरि का जीवंत रूप पीपल में मिल जाता है।
पत्र-कंद-मूल-फल औषधियों की खान हैं,
इसके सेवन से रोगी को मिलता जीवन दान है।
देकर शुभ संकेत संस्कारों के
समिधा बन यज्ञ की वातावरण
शुद्ध बनाता हूँ।

हाँ ! मैं वृक्षों में वृक्ष पीपल हूँ,
मैं अश्वत्थ हूँ, मैं देव वृक्ष हूँ।

निशा नंदिनी भारतीय
तिनसुकिया, असम

औरत, चालिस पार

औरत, चालिस पार हो जाती है
तो बंधन मुक्त जीना चाहती हैं।

बन जाती है वह ....
और भी सक्षम और समझदार।
दिल दिमाग से बेहद सुंदर और रौबदार।
अपनों से चाहती है प्यार का इजहार।

बन जाती है वह और भी प्रगल्भ
रखती है सबका खयाल, सुनती है दिल की बात।
परिवार की होती है, वह असली बुनियाद।
कभी बन जाती है, पति के दिल का अंतर्नाद।

अपने अधूरे ख्वाबों को बेटी में देखती है।
कभी टूट जाती हैं तो कभी
अपने आप को संभालती है।
कभी दर्द छुपाती है, कभी रो कर दिल हल्का करती है।

अपने पसंदीदा शौक भी पूरे करना चाहती है।
सजना सवँरना और सुंदरता भी निखार लाती है। जिंदगी की भाग दौड़ में
अपने होने का अर्थ तलाशती है।

जिम्मेदारियाँ उसकी कहाँ कमी होती है।
वह तो और भी बढ़ जाती है।
औरों की परवाह करते-करते
कभी खुद को भी भूल जाती है।

औरत चालिस पार हो जाती है
तो बंधन मुक्त जीना चाहती है।
पर क्या यह संभव होगा ?
सवाल खुद को ही करती है।
सवाल खुद को ही करती है।।

प्रा. द्वारका गिते
केज, बीड- महाराष्ट्र

कुरूक्षेत्र

कुरूक्षेत्र तैयार करों
हे अर्जुन गांडीव संभाल,
है धृतराष्ट्र से समर अपार।
मोह त्याग दो, धनुष उठाओ,
करों अब कुरुक्षेत्र तैयार।

भूखे बच्चे मरते हैं,
देश में पानी बिकते हैं।
स्वास्थ शिक्षा सब लाचार,
देश कुपोषण का शिकार।

गोली डंडे चलती है,
निर्धन के घर रोती है।
वो लुट रहे हैं अफसर बनकर,
हम घायल हैं निर्धन बनकर।

अत्याचार और शोषण से,
कण कण भी द्रवित हो उठा।
जनता की चित्कार सुनकर,
पत्थर का दिल भी रो उठा।

कहे निकेश अब अर्जुन बनकर,
जनहित में धनुष उठाना होगा।
कुरूक्षेत्र बनेंगी धरती,
धृतराष्ट्र को सबक सिखाना होगा।

निकेश सिंह निक्की
समस्तीपुर बिहार

कह मुकरी

खेलूं जिस से रंग हमजोली ,
घूमे जिसमें घर-घर टोली ,
संभले जिससे रंग हुड़दंग,
क्या सखि साजन , न सखि ढंग।

जिस पर कान्हा रास रचाये,
गोपी हमको रही बताये,
घायल कर दे चंचल चितवन ,
क्या सखि राधा ,ना सखि निधिवन।

जिससे हर्षित झूम चकोर ,
नाचे देख जिसे मन मोर ,
सुख पाता मन हर्षित "नंदा"
क्या सखि साजन ना सखी चंदा।

जिसके आते रौनक आये,
फौरन चहल पहल हो जाये,
जिसकी मीठी लगती झिड़की।
क्या सखि साजन, ना सखि लड़की।

डा. प्रवीण कुमार श्रीवास्तव"प्रेम"
सीतापुर।

आया बसंत

आया मदमाता ऋतुराज बसंत
हुआ सर्द शिशिर का अंत
धीमी आंच लिये बही चहुँओर बासंती बयार
मन में फूटी उमंग भारी कामना हजार।
बसंत ने मन में छेड़ा है प्रेम राग
छुपी भावना ले चला मोहे बादलों के पार
बासंती महक श्वासों में है घुली
मधुर तान कोयल की मन को है मोही।
खेतों में तिल-अलसी छायी है
बासंती रुत की पीत रीत भायी है
गेहूँ के स्वर्णिम बाल मदमस्त झूम रहे हैं
पीले फूल सरसों की चुनरिया ओढ़
देखो,दुल्हन सी वसुंधरा भी मुसकायी है।
वन उपवन में सहस्त्र फूल खिले हैं
मतवाले भौरों की अनुगुंजन मन को हरषायी है
आम्र तरु मंजरीयों से लद गये हैं
फूले महुआ-टेसू चहुँ दिगदिगंत सखि रे!
मानो प्रकृति आनन्दोत्सव मना रहे
रंग बिरंगे फूल-पल्लव खुशी और लय में लहर लहरा रहे।
फागुन पहुना के आने की आहट सी है
उड़ेंगे चहुँओर अबीर-गुलाल के रंग हजार
खड़ी द्वारे बाट निहारे आलि
लायेंगे पिया संग अपना प्यार।

अनिता निधि
जमशेदपुर

ग़ज़ल

आँखों में नमी दिल में कसक देख रहा हूँ
अब तेरी जुदाई की लहक देख रहा हूँ

हैं उकता गए सब लोग अब जुल्मों सितम से
सीने में बग़ावत की दहक देख रहा हूँ

मज़हब, जाति वर्गों में हमें बाँट रहे हैं
कुर्सी के सियासत की ललक देख रहा हूँ

जनता को कभी अफसर को ये पीट रहे हैं
सत्ता के हुकूमत की हनक देख रहा हूँ

पाई है फ़तह तुमनें इसे आग में तपकर
चेहरे पे रियाज़त की चमक देख रहा हूँ

रिश्ते हो कि चाहत हो सभी बेच रहे हैं
अब हर सिम्त पैसे की खनक देख रहा हूँ

करती है दुआ माँ की रहो 'राज' सलामत
हाथों में दुआओं की शफ़क़ देख रहा हूँ

राजेश कुमार जैसवारा 'राज जौनपुरी '
सहा. अध्यापक (अंग्रेजी)
झूँसी, प्रयागराज (उ. प्र.)

प्रेम का दीया

एक बार भी अनजाने से
मेरे हृदय में आते तुम,
एक बार भी प्राणों में
स्वांस बहा के जाते तुम।

परछाई के माध्यम से
हाल-ए-दिल कह जाते तुम,

अतीत - का ही किस्सा
वर्तमान में कह जाते तुम।

मैं सदा निहारता दिल में
तस्वीर बनके रह जाते तुम,
आश्चर्य चकित मेरी नज़रें
सदा के लिए बस जाते तुम।

जुबाँ से कुछ-भी न कहते
आँखों से सब कह जाते तुम,
एक बार मेरे सूने मन में
प्रेम का दीया जला जाते तुम।

डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा
पथरिया, दमोह (म.प्र.)

हरियाली

विशाल वसुधा के आँचल में
नैसर्गिक सौंदर्य है हरियाली।
जिसका सुमेल जीवन से है,
शुभ जगती की शान निराली।

बाग बगीचे उपवन कानन,
प्रातःप्राची में अरुणिम लाली।
श्यामल सुन्दर वसुंधरा पर
हरे फसलों की लहराती बाली।

वट-पीपल के सघन छाँव में
द्विज गण चहक रहे डाली।
मधुमास के रसाल कुञ्ज में
कूक रही भोर कोयल काली।

हरित क्रांति की हरीतिमा से
चहुँदिशी अवनि हो खुशहाली।
अमल प्राण वायु बहे निरन्तर
बगिया में हो अली और आली।

गिरि,बंजर से मरुभूमि तक
अचला न हो तरुवर से खाली।
नगर गाँव अरु कुटिया तक
वनसम्पदा की करें रखवाली।

सादर मित्रों! महि मंडित करें,
जन-जन बनें हम बनमाली।
आओ मिलकर वृक्ष लगावें,
पावन धरा पर हो हरियाली।

रामचंद्र प्रधान "लोईंग"
महासमुंद [छत्तीसगढ़]

रिश्ते

रिश्तों का रंग बदला है,
जीने का ढंग बदला है।
पहचान अब आती नहीं,
सब चाल-चलन बदला है।

कब हाथ से फिसलते है,
कब साथ साथ चलते हैं।
भविष्य है मंझधार में ही,
कश्तियां बदलते रहते हैं।

पैसों का है ये खेल सारा ,
उसी से ही ये मेल सारा।
मुसीबतों के वक्त ही तो,
रास्ता बदल के चलते हैं।

माता पिता और गुरु सखा,
ढ़ूंढ़ने से भी नहीं ये दिखा।
मॉम डैड संस्कृति में भाई,
गुरु सखा नहीं मिलते हैं।

डॉ सरला सिंह स्निग्धा
दिल्ली

सत्य को पहचानिये

सूक्ष्म कहो या कहो सूक्ष्मतम
नहीं कोई अस्तित्व हूँ !
अहंकार को चूर कर सकूँ
इसके प्रति कटिबद्ध हूँ !
तुम ने ऐसा मान लिया था
राज्य तेरा सर्वस्व है
नभ में , जल में औ धरती पर
बस तेरा वर्चस्व है !
जीव जन्तु या वनस्पति हो
हर प्राणी का दमन किया,
नदियाँ ,पर्वत ,सागर ,जंगल
सभी स्त्रोत का हनन किया !
समझा अब ये दम्भ तेरा
था नहीं किसी भी काम का,
निर्धन धनी सभी के सिर पर
काल का भय है आन पड़ा !
कितने ही अतिक्रमण तुमने
करे हैं इस धरा पर ,
दास समझा प्रकृति को
और हर ली उसकी सम्पदा!
मैं तो अपना रूप दिखला
शांत ही हो जाऊँगा ,
किन्तु तुम भी सोचना
जो सीख मैं दे जाऊँगा!
बस प्रकृति से उतना लेना
जितना तुमको चाहिये
क्षणिक है जीवन तेरा
इस सत्य को पहचानिये !!

उषा लाल
प्रयागराज

स्वप्ने

मेरे आँखों के सामने
एक किशोरी अपनी निःशब्दता से
खेल दिखाती है कलाबाजी के झूले पर
यह एक खिलाड़ी किशोरी की तरह
दौड़ती रहती एक एक आइस क्रीम
के गाड़ी के पीछे
एक लाल रंग की पैंट पहनी हुई
जब दौड़ती है तब सभी बाल भी
बिखर जाती है
लगता है जब किशोरी दौड़ती है
तब उसकी सभी स्वप्ने भी उड़ती रहती है
वे निर्वाक रहती है

रजत सान्याल
गुजरात

संकल्प

असीम
ऊर्जा का भंडार हो अंतस में
भाव हो, सद्भाव हो विश्वास हो
उल्लास हो, परिहास हो
किन्तु
सब शून्य है
संकल्प केअभाव में।
पतझर में पत्तियों का झड़ना हो
माला से मोतियों का बिखरना हो
मल्लाह का तूफ़ान से लड़ना हो
या फिर
गिनना हो चिड़ियों के पंखों को
जीवन की उड़ान में
सब व्यर्थ है
संकल्प के अभाव में।

रोमित हिमकर
वाल्टरगंज बस्ती, उत्तर प्रदेश

तुम ज़रूर वापस आओगे

अपने शौर्य और पराक्रम से तुम
दुश्मनों को रणभूमि में हराकर
मातृभूमि का गौरव बड़ाओगे
मुझे यकीन है तुम ज़रूर वापस आओगे

मेरी चूड़ियों ने मांगी है तुम्हारी सलामती के लिए लिए मन्नतें
अपनी बंदूक की गोली से चीर कर दुश्मन का सीना ,
तुम भारत मां को विजय दिलाओगे
मुझे यकीन है तुम ज़रूर वापस आओगे

तुम उम्मीद हो पूरे हिन्दुस्तान की
तुम तस्वीर हो मेरे अनकहे अरमान की
मेरी मांग में तुम अपनी जीत का सिंदूर लगाओगे
मुझे यकीन है तुम ज़रूर वापस आओगे

जब तक इस देश में सरिताओं की स्नेह धारा हैं
दिनकर का प्रकाश और हिमालय की छत्र -छाया हैं
तुम हर मुश्किल में शत्रु को परास्त कर शाने तिरंगा
फहराओगे
मुझे यकीन है तुम ज़रूर वापस आओगे

कुल के दीपक तुम ,अब देश की अमानत हो
युगों युगांतर तक तुम्हारा अभिवादन हो
हर बहन, हर मां की दुआओं से तुम दीर्घ आयु पाओगे
मुझे यकीन है तुम ज़रूर वापस आओगे

डॉ. वर्षा महेश "गरिमा"
मुंबई

ग़ज़ल

दिल में आता है कि इक घर ऐसा बनाया जाये
जिसमें ऊपर वाले की मूरत को सजाया जाये।

जहां नफरत और दुश्मनी की कोई जगह न हो
ऐसा खूबसूरत गुलशन दुनिया में बसाया जाये।

अमन और चैन की खुशियाँ हो अब चारों तरफ
चलो मुहोब्बत की खुशबू जहाँ में फैलाया जाये।

जिसकी छाँव में बैठ कर नयी जिन्दगी मिलती
ऐसा एक पेड़ अपने शहर मे भी लगाया जाये ।

बहुत दिनों वो मिला ही नहीं शायद तनहा होगा
उसके आँगन में चलो एक फूल खिलाया जाये।

हर तरफ रोशनी ही रोशनी दिखे इस जमीं पर
चलो उसके नाम से एक दिया जलाया जाये ।

उसके एहसानों से वाकिफ् नहीं ये दुनिया वाले
वो फरिश्ता है खुदा का ये सबको बताया जाये।

महेन्द्र प्रताप विश्वकर्मा
बस्ती [उत्तर प्रदेश]

भ्रातृभाव की दिव्य ज्योति से, नयी रोशनी लानी है

मानव सदा पलायन करता ,बेहतर जीवन की आशा में ।
विषम परिस्थिति से बचने की, नित नूतन प्रत्याशा में ।
संकट का यह दौर भयावह, करता गहरा आघात ।
तार तार मर्यादा होती, मूल्य हीन रिश्ते,जज्बात ।
उन्मादी समूह क्रोधातुर, नफरत कीआग लगाता है ।
धू-धू करती ज्वाला में तब, सत्विवेक जल जाता है ।
त्राहि त्राहि कर जनमानस तब,करता दूर पलायन ।
सारे सुन्दर सपनों को ,हर लेती नफरत डायन ।
सैतालीस की यह सच्चाई, इतिहास कलंकित करती है ।
द्वेषभाव की अंतिम परिणति,सर्वनाश तक करती है ।
नफरत की दीवार अभी भी, दुख के बादल लाती है ।
भग जाते घरबार छोड, जब भय की आंधी आती है ।
पंडित कश्मीरी हुए पलायित, यह कडवी सच्चाई है ।
सिखदंगो में सरदारों ने, छिप कर जान बचाई है ।
मानवता पर काले धब्बे, और न लगने पाए।
जो असली अपराधी हैं, बस सजा वही अब पाए।
प्रेम और सद्भाव जगा कर,नयी चेतना लानी है।
भ्रातृभाव की दिव्य ज्योति से, नयी रोशनी लानी है ।

डा अजीत कुमार सिंह
झूसी प्रयागराज

हाल- ए- दिल

रहते परछाई की तरह संग
सिक्के के शेर-बेर हम तुम,
हाल -ए- दिल क्या बताये
जानते हो बिन मिले भी तुम।

आज धरा ने हाल -ए -दिल सुनाया,
वही आपको सुना रही हूँ।

मुलाक़ात यूँ हुई, धीरे से मुस्कराई,
बोली वही हो ना तुम
पैरों में पायल पहन चलती
ठुमक -ठुमक,
कभी गिरती तो मैं संभालती।

हाँ,तुम धरती माँ हो,जानती हूँ
बोली माँ, "रिश्तों से कैसे दूर हुवे कुछ लोग,
छोड़ यम- नियम- आसन प्राणायाम,
सात्विकता को छोड़,
जो चाहा खाने लगे।

क़ब्रस्तान पेट को बना लिया
मरा जानवर दफ़्ना दिया,
पौष्टिकता से दूर हुवे,
अशांत मन लेकर घूम रहे।

देखो आकाश को
फैला उतना जितनी मैं
पक्षी ढंग से उड़ नहीं पाते,
खुली साँस बेज़ुबान ले नहीं पाते।

तितली, गौरैया, अन्य चिड़ियाँ
प्रजाति ही नष्ट हो रही,
धरा से हरियाली कहीं खो गई
सकरात्मकता कहाँ गई।

ज़ब परेशान हो, मैं बदलती करवट,
तब तुम कहते भूकंप,बाढ़
तूफ़ान, ज्वालामुखी, आया,
क्या हाल -ए -दिल सुनाऊंँ।

सुन लो ध्यान से....
पौधें लगाओ,हरियाली लाओ,
पानी- बिजली बचाओ,
अपनों में अपनापन लाओ।

हर जीव का सम्मान करो
मन में संकल्प सयंम रखो,
क्या लाये, क्या ले जाना
एक पल का पता नहीं।

पशु -पक्षी नित्य उतना लेते
उदर पूर्ति हो बस
जीओ और जीने दो,
तुम समझदार हो,
स्वयं ही समझ जाओ।

सुन धरा का हाल- ए- दिल
नमन किया उन्हें,
बताई उनकी सीख
बता रही हूँ मैं आज सबको।

डॉ. प्रभा जैन "श्री "
देहरादून

प्रतिशोध

मुहब्बत को आँखों से छलका रहे हो ।
मुझे तुम बहुत आज बहला रहे हो।।

बयां हो रहा है नजर से तुम्हारे।
कि तुम मुझसे फिर आज घबरा रहे हों

अभी कह दो जो मुझसे है तुमको कहना।
बिना बात क्यूं बात उलझा रहे हो।।

जो ढल जायेगी शाम फिर क्या करोगे।
बहारों के मौसम में शरमा रहे हो।।

कोई गैर ले जायेगा फिर उठाकर।
अभी कुछ भी कहने से इतरा रहे हो।

कहो राज दिल में छुपा क्या तुम्हारे।
यो गुप चुप से तुम क्यों चले जा रहे हो।।

कहीं रह न जाये ये फिर से अधूरी।
नयी बात कोई तो समझा रहे हो।।

प्रीती श्रीवास्तव
कानपुर

बच्चा होने दो

तोड़ लाने को नहीं कहूँगी
चाँद तारों को
ना ही माँगूँगी
तुमसे ऐशों आराम की वस्तुएँ
मैं चाहूँगी
तुम मुझे अपनी गोद में सर रखने दो
जहाँ ले सकूँ मैं एक झपकी
देख सकूँ कुछ सपनें
और याद कर सकूँ अपना बचपन
जहाँ दुनियादारी की बातों से
भरा नहीं होता था मन का कोना,
जहाँ माँ के आँचल का
पकड़ा होता था मैंने किनारा
उठा लों मेरे कुछ नखरें
कुछ मुस्कानें बिखेर सकूँ
कुछ जी सकूँ सुकून के लम्हें
बन सकूँ अबोध
थक गयीं हूँ बड़ा हो कर
इतना ही चाहती हूँ मैं
तुम मुझे बच्चा होने दो
अपने प्रेम में

वर्षा श्रीवास्तव
डुंगरिया, जुन्नारदेव, छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

गीत

बड़ी वेदना में घर-द्वार फँसी हैं उम्मीदें मँझधार!
कहीं स्वप्न की माला टूटी कही पड़ा आँसू का हार !

दूर कुहासा नील गगन है,
आग लगाता सा उपवन है!
मधुर साये की चंचलता से
चितवन की कुछ अनबन है!
इधर हवा जहरीली चलती उधर बहे छलके रस-धार!

ज़हर ओढ़ लेती है खुशबू
बहती मिली हवा चंचल!
आशाओं के जख्मों पर कुछ
छिड़क रहे हैं लोना-जल!
इधर दर्द का नगमा जीवन उधर सत्य शीतल साकार!

धूप लगी जब छाया भायी
दिखी गगन तब हरियाली!
निष्ठुरता की धूप में जलतीं
मुस्कानें हैं खाली खाली!
संवेदन है गाता फिरता धड़कन के अनुचित व्यापार!

नशा भरा है भीतर बाहर
यौवन में रहती है हलचल!
सपनों के संसार से छिटका
सब्र सदा कहलाये बुज़दिल
भोर लूट जाती है खुशबू शबनम होती रही शिकार!

राजेन्द्र यादव
रामपुरमून, हथगांव, फतेहपुर

जन्मों का फेरा

मेरी कलम कागज़ में तेरा ही बसेरा हो।
तेरी आंखों के नूर से ही नया सवेरा हो।।

तू देखें जिधर भी , उधर ही उजाला हो।
हो शामों सुबह , हर पहरों का फेरा हो।।

दिल के आशियाने में , तेरा ही बसेरा हो।
चले जब तक सांसें न कभी झमेला हो।।

जहां नज़र उठाऊं पूरी कायनात तेरी हो।
दो जिस्म में एक ही रूह का बसेरा हो।।

हो शामों सुबह , हर पहरों का फेरा हो।
लबों पर मुस्कान, हर खुशियां तेरी हो।।

जीवन संघर्ष में , सुख शांति का फेरा हो।
एक दूजे में ही ,एक दूजे का ही डेरा हो।।

श्रेष्ठ जीवन में , न कभी कोई बखेड़ा हो।
रहे साथ - साथ , न कभी तेरा - मेरा हो ।।

यश हर जन्मों में ,सिर्फ साथ तेरा हो।
रूह जान एक सिर्फ जन्मों का फेरा हो।।

यशवंत राय श्रेष्ठ
दुबौली गोरखपुर

सौंदर्य का प्रतिमान

मूझे देखने,पाने और छू लेने
की चाहत में शताब्दियों से
मिट रहे कितने चकोर
मेरी कल्पना मात्र से
कितने होते भाव- विभोर।
अपने और मित्रों की तरह
बाँट रहा कब से मैं भी
रोशनी का वरदान।
कहते हैं लोग
कि शरद पूर्णिमा की रात
बहुत सुंदर,कमनीय और आकर्षक
दिखता हूँ मैं।
सच तो ये है कि मावस से पूनम तक
अपनी पूरी कलाओं के साथ
सदैव एक सा सफर
तय करता हूँ मैं
कभी सभी के साथ
तो कभी अकेले पूरी रात
बिना थके बिन हारे
जानते हुए अपनी सीमायें
फ़िर भी कुछ दीवाने है
मेरे बिचारे।
जिस दिन मुझे पा लेंगे और छू लेंगे
टूट जायेंगे उनके सारे भ्रम
बदल जायेंगी शास्त्रों-पुराणों की सब
परिभाषाएं
सब रीति-रिवाज और परम्पराएं
ईद और करवा चौथ सहित
जितने भी पर्व और त्योहार हैं आज
हो सकता है मुझे पा लेने के बाद
भूल जाए समाज।
कवियो,शायरो और कलाकारो
सावधान
मेरे विम्ब और प्रतिविम्ब में
जो सौंदर्य दिखता है तुम्हें
उसमें न उलझो बन नादान
मेरे पीछे पड़ा है विज्ञान
मुझे पा लेना चाहता है
देखना चाहता है
और करीब आकर छूना चाहता है
इन्सान
जब तक मुझे नहीं पा पाया शैतान
तब तक मैं तुम्हारा प्यारा चंदा हूँ
बहनों का भाई
बच्चों का मामा
और तुम जैसों को
सौंदर्य का प्रतिमान।

वीरेंद्र प्रधान
सागर (मध्यप्रदेश)

मेरी माँ के आँचल में

हमेशा शबनम रहती नम हृदय की बंद सीपी में,
न होती स्निग्धता भी कम नेह संग सुंदर पेटी में।
सदा है नीम सी ठंडक और सुकूनियत का घेरा
न हो हरियालापन भी कम ये मेरी माँ के आँचल में।।

दबाकर रखती ही रहती अपने दुखड़े-परेशानी,
छिपाकर दर्द भी रखती ज्यों कहीं पुटली पुरानी।
सदा मुस्कान के मोती सजाकर रखती मुखड़े पे,
हैं कैसी सीखें सुहानी ये मेरी माँ के आँचल में।।

सुखद अहसास ही पाए जो पहले डांट भी खाई,
कभी आंबी से खट्टे भी कभी हो सोहन मिठाई।
कसैलापन आंवले सा कभी लगते नमकपारे,
हैं कितने स्वाद समाए ये मेरी माँ के आँचल में।।

तरलता नदिया के जैसी भावनाँ जैसे लहरें
न सूखे तट की हरियाली जैसे लहराती उमंगें।
पर्वतों से झरते झरने थिरकतीं हुईं नीर बूँदें,
बरसती हुईं दुआएँ हैं ये मेरी माँ के आँचल में।।

नीलम कुलश्रेष्ठ
गुना, मध्य प्रदेश

ग़ज़ल

मुझे बस तुम्हारी खबर चाहिए
दिल है इसे भी तो घर चाहिए

तुम्हारी कसम न कहूंगी मै कुछ भी
मुहब्बत में बस अब असर चाहिए

गमों की ये काली रातें बहुत हुई
उजालों भरी इक सहर चाहिए

ज़ालिम के जुल्मों की हद हो जहां पर
खुदा का वहां पर कहर चाहिए

मै शायर नहीं हूं मगर मै हूं आशिक़
लिखने को ग़ज़लें बहर चाहिए

दरिया का पानी है ठहरा हुआ सा
बहने को पानी लहर चाहिए

गले में बीमारी से अटकी है सांसें
मरने को थोड़ा ज़हर चाहिए

मुसाफिर हूं मै मेरी मंज़िल नहीं है
ठहर जाऊं लेकिन डगर चाहिए

खुशनुमा हयात
(एडवोकेट)
बुलंदशहर उत्तर प्रदेश

ग़ज़ल

क्या बताऊं इश्क ने मेरे दिल को क्या कर दिया।
दिल के सुकूं व रात के चैन को भी उड़ा दिया।।
पहले तो ऐसे न होती थी,जब जिंदगी में तू न थी।
दिल की जुस्तजू को तूने आंखों की गुफ्तगू में बदल दिया।।
तू आई इस तरह गुलजार ए मौसम होने लगा।
तन्हाइयों की तड़पन को वफ़ा की ठन्डक बना दिया।।
होंगे वो जो प्यार को कैलेण्डर की तरह बदलते हैं।
मैंने तो तेरी हर अदा को दिल में सजा लिया।।
तेरी मुस्कुराहट हाल ए दिल इस तरह बयां करने लगे।
शायद तूने 'इमरान' को अपने जैसा बना दिया।।

इमरान बस्तवी

गीत

तुम सजर की छाँव बन जाओ प्रिय
एक सुन्दर ठाँव बन जाओ प्रिय।।
चाहता आना तुम्हारे लोक में
डूब जाता हूँ तुम्हारे शोक में
मैं कभी बैठूं तुम्हारी छाँव में
मैं कभी ठहरूं तुम्हारे ठाँव में
एक सुन्दर गाँव बन जाओ प्रिय
तुम सजर की छाँव बन जाओ प्रिय।।
रात भर जागूँ तुम्हारी याद में,
झिमझिमाती सावनी वर्षात में
चाहता दिल भूल जाये स्वप्न सारे
देख लेता हूँ कभी आकाश तारे
है झील सुन्दर, नाव बन जाओं प्रिये
तुम सजर की छाँव बन जाओ प्रिये।।
खो न जाऊं है बड़ा अंजान रस्ता
देखकर हालत ये मधुमास हँसता
अनसुना सा रह गया इस ओर से
एक दो आवाज तुम उस ओर से
तप रहा रवि, छाँव बन जाओ प्रिये
तुम सजर की छाँव बन जाओ प्रिये।।

अमित वर्मा "अम्बर"
उसावां बदायूं उत्तर प्रदेश

मैं प्रेम पत्र तेरे नाम लिखूँ

कब मिलने आओगे मुझसे
बस यही मैं सुबहो शाम लिखूँ
तेरी याद मुझे तड़पाती है
मैं प्रेम पत्र तेरे नाम लिखूँ।।

मैं शब्द नहीं लिख पाऊँ आज
इस दिल का इक अरमान लिखूँ
कब तक यादों में रहोगे तुम
मैं प्रेम पत्र तेरे नाम लिखूँ।।

दोनों के बीच की दूरी का
इज़हार-ए-मोहब्बत शाम लिखूँ
मैं इंतज़ार में बैठी हूँ
ये प्रेम पत्र तेरे नाम लिखूँ।।

बेचैन मैं जब-जब होती हूँ
मैं प्रेम पत्र तेरे नाम लिखूँ
तेरा प्रेम पत्र नहीं मिलता है
फिर भी मैं दिल तेरे नाम करूँ।।

मेरा दिल तेरा वैरागी है
मैं प्रेम में तेरा नाम लिखूँ
तेरी याद में सुध-बुध खोई हूँ
मैं प्रेम पत्र तेरे नाम लिखूँ।।

मेरा प्रेम पत्र जब पाना तुम
ऐसे पढ़ना मैं जान सकूँ
इक तुझको ही साजन अपना
ये दिल तेरे ही नाम करूँ।।

तुम भी कुछ लिखना आज सजन
मैं हाल तुम्हारा जान सकूँ
कब तक दूरी ये कम होगी
मैं तन्हा तुझको याद करूँ।।

उम्मीद लिए मैं बैठी हूँ
हर सुबहो और हर शाम को यूँ
कब मिलने आओगे मुझसे
मैं प्रेम पत्र तेरे नाम लिखूँ।।

साक्षी सांकृत्यायन
प्रयागराज उत्तर प्रदेश

वक़्त मिले... दीदार करना

कभी इस उजड़ी बस्ती का दर-निकार करना,
गर वक़्त मिले कभी तो मेरा दीदार करना।
मैं अब तेरा भी बेईम्ताहन इंतज़ार करता हूँ,
तू माने या ना माने, मैं तुम्हें अब भी प्यार करता हूँ।
रौशनी गर उजाला करती है तो,
अंधेरों की जरुरत होती है;
मानो या न मानो,
मोहब्बत सिर्फ ऐसे ही होती है।
गुस्ताखी तो मेरी ही थी,
कि मैं मोहब्बत का इज़हार ना कर पाया,
कुछ खामियां तुम्हारी भी थी,
कि तुमने अपने दिल में अब तलक ये राज़ है छुपाया।
इल्ज़ाम सरेआम लगा देते हैं लोग,
रहम ना कर, इल्ज़ाम लगा देना मुझ पर बेवफ़ा का
जो कहोगे, वही मानेंगे, सच ना समझेंगे लोग,
गर कभी फुर्सत मिले, तो फिर से आज़माना
और फिर से मेरा जीना तार तार करना,
गर वक़्त मिले कभी तो मेरा दीदार करना।
कभी इस उजड़ी बस्ती...

डॉ ओम प्रकाश रत्नाकर
दानपुर, करमा प्रयागराज, उ.प्र.

दुख के बाद सुख

दुख आने पर ही दुनियाँ में,सुख के दर्शन होते है।
फूलों की सौरभ वे पाते,जो कांटो के दंश सहते हैं।

अगर नहीं पतझड़ तो कैसे,बासंती मधुमास खिले।
अगर नहीं तम घोर निशा का,तो कैसे प्रत्यूष मिले।
विषका घट ले हाथ वही,घट अमृत का फिर पातेहैं।
दुख आने पर ही दुनियाँ में,सुख के दर्शन होते है।

जो लहरों से डरे,किनारे पर ही, हार खड़े रहते।
पाँव डूबोने से डरकर जो,साहिल बीच पड़े रहते।
भला कहाँ वे सागर की,मौजो का सुख ले पाते है।
दुख आने पर ही दुनियाँ में,सुख के दर्शन होते है।

जो चोटो संग नही खेलते,वे कोरे पाषाण रहे।
जो घन की थापों से डरते, कोरे अनगढ़ पड़े रहे।
अविरल चोटे सहते जाते,शिव लिंगी कहलाते है।
दुख आने पर ही दुनियाँ में,सुख के दर्शन होते है।

कदम कदम पर लिया सहारा,कहाँ देरतक टिक पाये।
उदयकाल से अस्तकाल तक,गैरो के कंधे आये।
फोड़ धरा अपने बलबूते, वृक्ष वही बन पाते हैं।
दुख आने पर ही दुनियाँ में, सुख के दर्शन होते है।

छोड़ निराशा बढ़ो वेग से,हर तुफां से भिड़ जाओं।
डरो नहीं तुम हालातों से,हर बाधा से लड़ जाओं।
होड़ लगाते पवन वेग से,वे पंछी उड़ पाते है।
दुख आने पर ही दुनियाँ में,सुख के दर्शन होते है।

हेमराज सिंह
कोटा राजस्थान

मर्यादा की रेखा लाँघ चुकी औरत

एक बार मर्यादा की रेखा लाँघ चुकी औरत
वापस नहीं जा सकती, फिर से उसके अन्दर
बड़े गर्व से कही थी रावण ने यह उक्ति
बेबस सीता का हरण करते वक्त
पर कहना भूल गया वह कि
जब जब हम विवश करते रहेंगे तुम्हें
रेखा लाँघने को , तुम हो जाओगी संज्ञाहीन
और मुझ सरीखे जाने कितने रावण
आतुर रहेंगे तुम्हारे देह की पवित्रता
अपनी नजरों से लील लेने को
पर हाँ..तुम चाहे मुझे ओछा ही समझ लेना
लेकिन न छुऊँगा मैं तुम्हारे नाखून भी
बगैर तुम्हारी इच्छा , तुम्हारी स्वीकृति के
क्योंकि जानता हूँ मैं कि
मर्यादा रेखा से बाहर आई नारी भी
उतनी ही आचारशील और चरित्रवान है
जितनी हजार पापों को धोती माँ गंगा
हाँ सीते..मैं राक्षस हूँ , पर समझता हूँ
एक स्त्री पर डाली गई कुदृष्टि
करती रहेगी उसे मजबूर अग्निपरीक्षा देने को
हर बार ,उसके आखिरी सांस तक...

वीणा
झुमरी तिलैया, झारखण्ड

मेरी बेटी

मेरी बेटी की मुझको,
बहुत याद आती है,
दिन हो या रात हो,
उसकी याद सताती है,
आवाज़ उसकी कानों में,
मिश्री सी घोल जाती है,
उसकी एक आहट से,
खुशियां आ जाती हैं,
रोती है वो जब जब,
मेरे दिल को भी रूलाती है,
हस कर, मुस्कुरा कर,
मेरे दुख वो भुलाती है,
जीवन को नया मकसद,
मेरी बेटी दे जाती हैं,
हर रिश्ते को नई जान,
उससे मिल जाती है,
मेरी बेटी की मुझको,
बहुत याद आती है।
हर एक भोली सुरत में,
अब देखता हूं उसको,
कोशिश तमाम करता हूं,
रोकने की खुद को,
मन तो मान जाता है,
पर आँखे नम हो जाती हैं,
तन्हा रहूँ या भीड़ में,
उसकी, हर बात याद आती है,
मेरी बेटी की मुझको,
बहुत याद आती है।

जब जब मैं दुर जाता हूँ,
चुप रहके भी दिल रोता है,
पी जाता हूं अपने आँसू,
पर मुश्किल से दिल सम्भलता है,
अब समझ पाया हूं, क्या?
कलेजे का फटना होता है,
बच्चों से दुर रहकर, क्या?
माँ बाप का तड़पना होता है,
क्यूं , हर बाप की दुलारी,
ये बेटियाँ होती हैं,
क्यूँ , खुशहाल है वो आँगन,
जहाँ बेटियाँ चहकती हैं।
घर के हर एक कोने में,
नई जिंदगी आ जाती है,
जब जब मेरी बिटिया "श्री",
लक्ष्मी सी घर में आती है।
चाहता हूं रहना,
हमेशा उसके पास ही,
और जीना उसका,अपना
बचपन उसके साथ ही,
पर मेरी जिम्मेदारीयाँ,
उससे दूर लेकर जाती हैं,
मेरी बेटी की मुझको,
बहुत याद आती है,
मेरी बेटी की मुझको,
बहुत याद आती है।

डॉ गौरव कुमार सिंह
खुटारी, कलवारी, मड़िहान, मिर्ज़ापुर, उत्तर प्रदेश

यादों की किताब

चलो यादों की एक किताब लिखते हैं
बातें जिसमें बेहिसाब लिखते हैं।
बीते एहसासों के रंग बिखरते जाएंगे
अनकहे किस्सों के पन्ने खुलते जाएंगे।

यादों के खुलते पन्नों में
ज़िक्र तुम अपना पाओगे।
जिस मोड़ पर गए थे छोड़
वहीं हमें तुम पाओगे।
दूर जाने की कोशिशें
नाकाम ही होती पाओगे।

बार-बार जाकर भी लहरों की तरह
वापस लौटकर आओगे।
पाना- खोना तो है खेल किस्मत का
जिसको कभी बदल नहीं पाओगे।
माना दृश्य बदल गये हैं जीवन के
पक्के रंगों की ये तसवीर मगर
तुम कभी बदल नहीं पाओगे।

अलका 'सोनी'
बर्नपुर, पश्चिम बंगाल।

कुनकुनी धूप

सुबह सवेरे की हल्की
कुनकुनी सी धूप
और आँगन में
अमलतास का झरना
जैसे जिंदगी का फिर
जिंदगी से मिलना
रात जो अविरल मन
बह रहा था उनकी
यादों में.....
इस अनुपम छटा संग
विचर रहा है नव स्वप्नों
का हाथ थामें..वहाँ
जहाँ केवल उमंगों
और आशाओं को
पनाह मिलती है...
वेदनाओं से धराशायी
ख़्वाबों को फिर से
समेटने में ....
माना वक्त लगेगा.....
पर ,नाउम्मीदियों में
ज्यादा वक्त जीना
कभी भाया नहीं मुझे
हसरतों को साकार
करने उन्हें...
विस्तृत रूप देने में
सक्षम हैं मेरी क्षमताएँ।

निधि भार्गव मानवी
गीता कालोनी ईस्ट दिल्ली

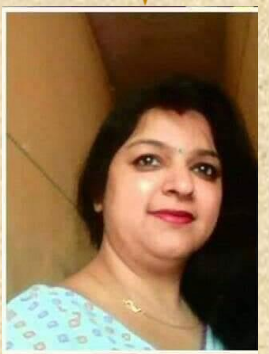

आधुनिक मनुज जीवन

कहाँ जा रहा नित ये
मनुज जीवन
मीलों दूर हो गए खुशियों के उपवन
रिश्तों में है केवल दिखावापन
अब तो चहुंओर बड़ी कोठियां
कहाँ गए वो खपरैल के आंगन
कहाँ जा रहा....................।
वो भी था एक जाड़े का मौसम जब,
खेतों में सरसों के पुष्प देख पुलकित हो
हो जाय तन मन
अब तो इस बनावटी दुनिया में
सरसो पुष्प भी अवसन्न
कहाँ जा रहा..................।
पहले एक आंगन में रहते थे
सब पर अब एक
आंगन में है कई आंगन
पैसे के वजन से अब तो रिश्तों का
हो गया है समापन
कहाँ जा रहा..................।
"रजत" का है सबसे निवेदन कि
सब जियें अपना वास्तविक जीवन
अपने चेहरे से हटा दें ये दिखावापन
फिर देखिए कैसे सबके जीवन में
केवल होंगे खुशियों के सुमन।
कहाँ जा रहा....................।

रूपेश कुमार श्रीवास्तव 'रजत'
देवरिया, उत्तर प्रदेश

मां

ओ मां! ओ मां!!
तू ममता की मूरत है।
प्यारी प्यारी तेरी सूरत है।।
अपना धर्म निभाकर
दुनिया में मुझको लाई है।
चलना मुझको सिखलाकर
जीने की राह बताई है।।
जब जब भी मैंने याद किया
दोड़ी दोड़ी चली आई है।
संकट जब मुझ पर आया
तू ही मार्ग दिखाई है।।
ओ मां! ओ मां!!
तू ममता की मूरत है।
प्यारी प्यारी तेरी सूरत है।।
एहसान तेरे कर्ज का न चुका पाऊंगा।
बेटा तेरा अच्छा कैसे बन पाऊंगा।।
प्यार तेरा सच्चा और ममता है अनमोल।
मैं खुश रहूं, मेरे लिए सदा बोलती है बोल।।
क्या खुबसूरत तकदीर मैंने पाई है।
मेरी प्यारी मां बनकर तू आई है।।
ओ मां! ओ मां!!
तू ममता की मूरत है।
प्यारी प्यारी तेरी सूरत है।।

हरि प्रकाश गुप्ता
भिलाई छत्तीसगढ़

मुक्तक

जीवन में मुस्कान नहीं है ,
अब जीना आसान नहीं हैं ,
सारे दुखड़े हँस के टालो ,
कोई दुख तूफ़ान नहीं है।

जीवन है खुशियों का मेला,
कहीं दुखों का मिले झमेला ,
हँसते गाते जो दुख टालें ,
सदा वो पाते सुख का रेला।

जीवन में परिहास खो रहा ,
कातर मनवा आस खो रहा,
दुख की भूल भुलैया में अब ,
खुशियों का इतिहास खो रहा।

महेंद्र कुमार वर्मा
पुणे [महाराष्ट्र]

तुम शहर हो

हाँ, तुम एक शहर हो।
सुबह की किरण,
तुम्ही सी होती है,वहाँ।
शाम की कुछ ख़्वाहिशें,
तुमसे ही उलझी रहती है। वहाँ
तुम बस एक शहर हो।

खोया रहता हूँ। अक़्सर
तुम्हारे इर्द- गिर्द में,
बेवज़ह तुम्हारी खूबियां,
गिनाता रहता हूँ। इधर-उधर मैं,
दोस्तों में होती है। बाते अक्सर
तुम्हारी,
कुछ बातों को रख लेता हूँ।
चुन कर अब मैं,
हाँ, तुम एक शहर हो।
हाँ, तुम एक शहर हो।

सुबोध कुमार वर्मा
आम बागान सिहोडीह, गिरिडीह
झारखंड

कविता

एक शाम
यूँ ही पढ़ रहा था
ज़िंदगी की किताब को
कि मिलकर कर गयी हैरान वो
पूंछा ही था बस, क्या जानते हो मुझे
भूल गए या, अब भी पहचानते हो मुझे
मैंने भी चश्मे को सही करते हुए, उसको देखा
उन्ही पन्नों पर खींची थी, कई तिरछी रेखा
झांक रही थी , लिखीं पक्तियों के बीच से
जो लिखा था कभी , ज़िंदगी की सीख से
कहीं बचपन की शैतानी   लिखीं थी
कहीं परिवार की परेशानी लिखीं थी
कहीं लिखीं थी दोस्तों की मोहब्बत
कहीं जुदाई की निशानी लिखीं थी
कहीं धुंधली धुंधली यादें थी
कहीं महकती हुयी बातें थी
कहीं थी समाज का चेहरा
कहीं खामोशियों की रातें थी
कहीं माँ की लोरियां थी
कहीं बेटे की तुतली तुतली बोलियाँ थी
कहीं पापा की डाँट थी
कहीं बहन की मुस्कान थी
कहीं पत्नी से टकरार लिखीं थी
कहीं भाई की फटकार लिखीं थी
पलट कर देखा दूजा पन्ना
ज़िन्दगी की एक किताब लिखीं थी
हौले से फिर उसने ,
हाथ मेरा पकड़ लिया
लिखीं हुई कोई हूं कविता ,
प्यारा सा अहसास दिया
बोली यूं ही लिखते रहना
सुख दुख को तुम बुनते रहना
फूल फूल तुम चुन लेना पर
कांटों को तुम लिखते रहना
मैं समाज का एक दर्पण
सबके लिये मैं हूं अर्पण
आने वाला भविष्य है मुझमें
भूत काल का मैं समर्पण
क्या नहीं मुझमें समाया
शायद मैं हूं एक माया
हूं हकीकत मैं परंतु
हूं विचारों की मैं छाया
हैं मेरे रुप कई
ज़िन्दगी की धूप कई
लिख दिया ज़जबात तुमने
तब जाकर पूर्ण हुई
फिर अचानक याद आया
समझ रहा था कविता जिसको
उसको अपना ही स्वरूप पाया
उसको अपना ही स्वरूप पाया

आलोक सिंह "गुमशुदा"
महमूदाबाद (सीतापुर) उत्तर प्रदेश

ग़ज़ल

कैसे राब्ता रहेगा ता-उम्र ज़िंदगी से।
हवा ये कितनी तंग है हर आदमी से।

कैसे सिमट गया सब एक कमरे में।
जो कुछ बिखरा था ये इक सदी से।

ये नहीं है खेल कोई बच्चों का यहां।
उभरने में वक्त लगा है हर त्रासदी से।

है ज़ंज़ीर ए ज़ीस्त उसी के हाथों में।
कौन मरता है यहां अपनी खुशी से।

मुंह के बल गिरा है ये इतिहास देखो।
जब भी उलझा है आदमी प्रकृति से।

कलाम, अटल, रविन्द्र या और कोई।
सीख लो कभी किसी की जीवनी से।

बनाना होगा एक मुख्तलिफ नक्शा।
या फिर यूं ही जीना होगा बेबसी से।

सतीश कुमार

तकनीक ने कर दी

आसान नहीं है आजकल
बच्चों को बड़ा करना
पढ़ा लिखा कर उन्हें
अपने पैरों पर खड़ा करना।
तकनीक ने कर दी है
तबाह मासूमियत उनकी
नहीं भाता है उन्हें आपस में
प्यार से लड़ा करना।
नज़रंदाज करते हैं बुजुर्गो के
नसीहतों को बेख़ौफ़
बुरा मानते हैं अब उस्तादों का,
तमाचे, जड़ा करना।
खुदगर्ज़ ख्वाहिशों के तले
दफ़न है बचपन कहीं
वो छोटी-छोटी चीजों के लिए
ज़िद पे अड़ा करना।
जाने अजय कब होगा
ख़त्म चलन ये ज़माने का
देख कर तरक्की औरों की
नज़रों में गड़ा करना।

अजय प्रसाद
अंदल, बुर्दवान, पश्चिम बंगाल

एक ग़ज़ल

कुछ हसीं फूलों से जीवन को सजा ले अब तो,
खुद को गुमनामी के पतझड़ से बचा ले अब तो.

मेरे जख्मों पे बड़ी तेरी इनायत होगी,
संग हाथों में कोई तू भी उठा ले अब तो.

अपनी गुल्लक को दिखा माँ को कहा बेटी ने,
है बहुत पैसे तू पापा को बुला ले अब तो.

अपने आपे में नहीं कब से मुझे क्या मालूम,
मेरे हमराही तू कैसे भी निभा ले अब तो.

पिछले मांझी की शिकायत तो बहुत करता है,
पूरी कश्ती है मगर तेरे हवाले अब तो.

मेरी आँखों में नहीं यादों के आंसू फिर भी,
मेरी ग़ज़लों को ही सीने से लगा ले अब तो.

मेरे अंदर से मिटा दे तू हवस चलने की,
मुझको देते हैं तड़प पांव के छाले हो अब तो.

मनोज अहसास
नकुड़, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

स्वर्णिम दौर..

स्मरण तो है ये हम सभी को
कि वो एक स्वर्णिम दौर था
जब चाहे गाँव हो या शहर हो
हर घर में संयुक्त परिवार था..

जब आता कोई पर्व त्योहार
तो सब उत्साहित हो जाते थे
सम्पूर्ण हर्षोल्लास के साथ सब
मिलजुल कर साथ मनाते थे..

चाहे हो गम की बदरी या
फिर सुख की बरसात हो
आसाँ हो जाता था सब कुछ
जब अपनों का साथ हो..

हर परिस्थति में एक दूजे का
सब हरदम साथ निभाते थे
इम्तीहान की घढ़ी में इक दूजे का
वो संबल बन जाते थे..

खो गये संयुक्त परिवार
अब बदल गया परिवेश
भाई को ही अपने भाई से
अब होने लगा है द्वेष...

काश कि हो जाये फिर से
सब में आपस में भाई चारा
एक और एक मिल कर के
वो हो जायें फिर से ग्यारह..

लीना खेरिया
बोदकदेव, अहमदाबाद

ग़ज़ल

जबसे मेरे करीं आप आने लगे
प्यार के गीत हम गुनगुनाने लगे

आपकी याद में खो गये इस क़दर
ग़म मुझे छोड़कर दूर जाने लगे

आपके प्यार का आसरा जो मिला
हम भी ख़ुश हो गये मुस्कुराने लगे

ज़िन्दगी भी मुझे रास आने लगी
हम भी जीवन के सपने सजाने लगे

देखकर के मुझे तेरी आग़ोश में
चाँद तारे सभी मुस्कुराने लगे

अंकिता को नयी ज़िन्दगी मिल गयी
हौसला आप जबसे बढ़ाने लगे

अंकिता सिन्हा
जमशेदपुर झारखंड

स्त्री की पीड़ा

कभी संकट के बादल बन कर आता था रात का अंधेरा !
क्या कहूं मैं अब तो दिन के उजाले में भी खतरा है बहुत !!

तुम्हारी शौक ने तुम्हारी ज़िंदगी में अंधेरा कर रखा है !
मेरी जो मानो तो फिर से ज़िंदगी में उजाला आ जाए !!

हर वक्त अंधेरे को कोसना अच्छा नहीं साहब !
कभी-कभी दिया जलाने की भी बात करिए !!

अंधेरा देखा है अब तक की ज़िंदगी में बहुत हमने !
हां मगर मुस्कुराते हुए हर बार उजाला कर लिया मैंने !!

अंधेरे का ख़ौफ़ क्यों दिखाते हो हमको तुम !
हमें तो दीपक जलाने की आदत है बचपन से !!

अंधेरे और उजाले का फ़र्क अच्छी तरह मालूम है हमको !
अमावस की अंधेरी रात जो जागकर बिताई है हमने !!

तेरे आंगन का अंधेरा मिटेगा सिर्फ तेरे प्रयासों से !
किसी मसीहा के चक्कर में समय न गंवाना तुम !!

तारकेश्वर मिश्र जिज्ञासु
अंबेडकरनगर उत्तर प्रदेश

कविता

भावों के पूर्ण लालित्य में
ग्रंथों के सम्पूर्ण पांडित्य में
हिन्दी के गहन साहित्य में
रसभीने अलंकृत कवित्व में
विलक्षण काव्य सौष्ठव से
उत्पन्न होती उद्दात कविता

अनहद की मधुर गूंज में
मौन ह्रदय की अनुगूंज में
आकुल निःसृत प्राण में
ईश्वरीय अनुभूति प्रीति में
सेवा समर्पण की रीति में
प्राण चेतना भरती कविता

प्रकृति के रंगीले सौन्दर्य में
वीरता के ओजस्वी शौर्य में
ह्रदय के सुकोमल औदार्य में
अलंकृत युगल सुख कैशोर्य में
नवयौवन प्रणय निवेदन में
पल्लवित होती नव कविता

कालिंदी के कुंज पुलिन में
निकुञ्ज रस की झांकी में
कन्हैया गोपी लीला बांकी में
वेणु की जादूगर झंकार में
भोर की अमृतमयी टंकार में
मुखरित गाती कविता

महादेव के डमरु त्रिशूल में
सृष्टि के जर्रे जर्रे कांटे फूल में
उपवन की मृदुल बयार में
वाणी की वीणा के स्वर में
रमारमण के क्षीरसागर में
उदबोधित चेतनानन्द कविता

सूर तुलसी मीरा के छन्द में
पन्त प्रसाद कबीरा के द्वन्द्व में
महादेवी अज्ञेय निराला के रंग में
आधुनिक युग की स्वर्णिम जंग में
कवियों की दिव्य श्रृंखला के ढंग में
गंगा सी निर्झर प्रवाहित कविता

गुणों के सुन्दर अनुशीलन में
अवगुण के दमित अवगुण्ठन में
स्मृति के झलकते अवशेषों में
ढलकते खास चिन्ह विशेषों में
अजंता एलोरा के उत्कीर्ण भासों में
उल्लसित तरंगित रंगीली कविता

सीमा गर्ग मंजरी
मेरठ

दोहे (श्रृंगार)

तन मन दोनों चाहते, प्रिये तेरा साथ ।
शीश तुम्हारे वक्ष पर, हाथों में हो हाथ ।।

आओ तुम नजदीक में, रहो न ऐसे दूर ।
प्रेम नदी में डूबने, इच्छा है भरपूर ।।

मिलने आओ तुम सखी, महक उठे हर अंग ।
जैंसे होता है कभी, लता बिरछ का संग ।।

गोरी तुझको देखने, नैन बहुत वेचेन।
सारी पीड़ा प्यार की, सब तेरी है देन ।।

सोना तुझको देखने, हिरदय है वेचेन।
तरस रहे हैं ताकने, सजल हमारे नैन।।

जैंसा तेरा नाम है, बैंसा ही हो रूप ।
कंचन काया पर पड़े, जैंसे प्रातः धूप ।।

दुर्गेश कुमार सजल
उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान भोपाल मध्यप्रदेश

इंतजार कविता

एक शाम माँ की फिर उदास हो गई,
इंतजार में आँखें थक कर नम हो गई,
विश्वास था एक दिन बेटा आएगा,
वृद्धाश्रम से मुक्त करा अपने घर ले जायेगा,
जिन्हें बोलना सिखाया,
वही ताने सुनाता है,
दिल का टुकड़ा माना जिसे,
वही दिल में तीर चुभाता है,
रिश्तों की अहमियत समझाती थी जिसे,
वही रिश्तों का मजाक बनाता है,
ऊँगली पकड़कर चलना सिखाया,
वही हाथ पकड़ कर,
वृद्धाश्रम पहुंचाता है।
बच्चों के जीवन में बसंत लाने,
अपना बसंत कुर्बान कर दिया,
और पतझड़ हमारे जीवन से जाता ही नहीं,
हमारे रोपे पौधे आज वृक्ष बन गए,
लेकिन हम छाया के लिए तरस रहे हैं,
सबको तृप्त करके खाते थे,
आज एक रोटी के लिए,
मोहताज हो गए हैं,
बेटा आगे बढ़ो, आसमान में उड़ो,
लेकिन जिसकी छत्रछाया में,
पलकर बड़े हुए हो,
उसे वृद्धाश्रम में न छोड़ो,
उसे वृद्धाश्रम में न छोड़ो।

श्रीमती शोभा रानी तिवारी
इंदौर मध्य प्रदेश

सबसे ख़ास हो तुम

कितनी ज्यादा है दूरियां तेरे मेरे दरमियाँ
आज कल न मिले खुशी सिर्फ ग़म है यहाँ
तुम जो हो साथ मेरे खुशियाँ मुझे आ मिली
जब जब तुम मुस्कुराई देखो कलियाँ खिली
तेरे मेरे इश्क़ की आज कहानी मुक्कमल हो गयी
आज तेरी रूह देखो मेरे रूह में उतर गयी
मेरे हर खाते का तू हिसाब बन गयी
मेरे सारे सवालों का जवाब बन गयी
मेरी मोहब्बत पर तेरा अब हक़ हो गया
मेरा जिस्म मेरा कहाँ अब तेरा हो गया
तेरा अक्स अब मुझे आइनों में दिखता है
ये नशा है इश्क़ का जो मुझपे चढ़ गया
मेरी साँसों में खुद को बसा ले अब
नाम मेरा अपने मे मिला ले बस
मेरी ज़िन्दगी की सबसे हसीं ख़्वाब हो तुम
उम्र भर के लिए मेरे लिए सबसे ख़ास हो तुम।

शुभम पांडेय गगन
नबाबगंज गोण्डा

कलम की चाहत

न संताप मग्न हो रूदन की
और न ही शोक मनाने की
कलम की चाहत है   आज
उत्साह के छंद   बनाने की।
जगत के सारे प्रकाश को
मुट्ठी में अपनी ऐसे भर
नए दीप जलाना चाहता है
ऊष्मा से आलोकित अंतर।
नष्ट कर पुरानी जड़ता को
बढ़ाकर सृजन का   व्यास
कलम चाहती है करना फिर
उसी आवेग से नए प्रयास।
अक्षर ब्रह्म की इस साधना से
कर अपनी शक्ति का विस्तार
आज कलम चाहती है   देना
सपनों को सत्य   का आकार।
जीवन के एक नए पृष्ठ पर
विजय की कहानी गढ़ने की

कलम की चाहत है अब मात्र
अविरत गति से बढ़ने की।
अंत:करण के इन प्रश्नों का
अंतर में ही ढूंढ के समाधान
सफल हुई है समझने में अब
मिला कल्पना का जो वरदान।
सारी शंकाओं के उत्तर पाने से
मिट गए मायाजाल –से   भ्रम
एक ध्येय की एक ही दिशा में
आत्मबल कर रहा पूर्ण उद्यम।
तज हताशा विषाद व क्लेश
आत्मबल से दुबारा   उठकर
आज बटोही को दिख रहीं हैं
नयी राहें और नवीन   डगर।
ओज भरी अपनी दृढ़ वाणी
समस्त विश्व में पहुंचाने की
कलम की चाहत हुई है आज
पुन: कवि को अपनाने की।

क्षितिज जैन
बिंदायका पोस्ट ऑफिस, जयपुर

कविता

प्रेम-गीत मेरा तुम !

प्रेम-गीत मेरा तुम प्रिये ।
अमर-गीत मेरा तुम प्रिये।।
कैसी बिछड़न जीवन की ये ।
सांसो की तुम डोर प्रिये ।।
लगता न था,कभी जीवन में ।
ऐसा भी सुखद दिन आयेगा ।।
मैं रूठता सा रहूंगा तुमसे ।
और तुम मनाने आओगे प्रिये ।।
प्रातः-गीत मेरा तुम प्रिये ।
सांझ-गीत मेरा तुम प्रिये ।।
कैसी दिल्लगी जीवन से ये ।
यादों की तुम मुस्कान प्रिये ।।
लगता न था, कभी राहों में ।
ऐसी मुलाकात भी तुमसे होगी ।।
मैं देखता रहूंगा हर पल तुमको ।
और तुम मुस्कराती रहोगी प्रिये ।।
महफिल-गीत मेरा तुम प्रिये ।
विरक्त-गीत मेरा तुम प्रिये ।।
कैसी तड़फ मुहब्बत से ये ।
हृदय की तुम धड़कन प्रिये ।।
लगता न था, कभी बातों में ।
इस कदर भी मुहब्बत होगी ।।
मै खोता रहूंगा हर पल तुममें ।
और तुम मुझमें समाती रहोगी प्रिये।।

रवीन्द्र मारोठी रवि

माँ

आदमी का अन्त भले ही कैसे भी हो
पर सबका जन्म माँ से ही होता है

न माँ जैसा कोई जब में प्यारा शब्द है
न उसका कोई पर्यायवाची होता है

आदमी का अंत भले ही कैसा भी हो
पर सबका जन्म माँ से ही होता है

उज्ज्वल है ये सारा संसार माँ से
माँ हर जीव की जीवन दाता है

उनके दिल के बहते जज्बात न पूछो
जिनके सर माँ का हाथ नहीं होता है

न माँ जैसा कोई जग में प्यारा शब्द है
न माँ का कोई पर्यायवाची होता है।।

महेश राठौर सोनू
मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश)

मां मैं भी जीना चाहती हूं

मां मैं भी जीना चाहती हूं
इस समाज की बुराईयों को
दूर करना चाहती हूं
तुम्हारे साथ हर कदम
हर समय बढ़ाना चाहती हूं
शिक्षा पाकर मैं इस समाज में
तुम्हें सम्मान दिलाना चाहती हूं
बेटा बेटी एक समान
ये समाचार फैलाना चाहती हूं
मां मैं भी जीना चाहती हूं
मुझे भी जन्म लेने दो
फिर एक इतिहास रचाऊंगी
नहीं आने दूंगी कोई आंच तुम पर
इस दुनिया से घोर अपराध मिटाऊंगी
झांसी की रानी और इन्दिरा की तरह
अपने देश पर मर मिट जाऊंगी
तुम्हारी पहचान हो इस दुनियां में
ऐसा नाम कमाऊंगी।

आशीष भारती
सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

प्रेम

प्रेम सबको करो, यह ही आधार है।
प्रेम बिन, यह जगत ही निराधार है।
तोल कर मोल दे वह तराजू नहीं।
अनमोल इसका सब संसार है।
प्रेम सबको करो, यह ही आधार है।
प्रेम बिन यह जगत ही निराधार है।

नफ़रतों के धुएं से जब अंधेरा हुआ।
प्रेम के दीप ने ही उजाला किया।
जब मरहम कोई घाव भर न सके।
प्रेम के एक छुवन ने ही अच्छा किया।
प्रेम हो न अगर तो सब बेकार है।
प्रेम बिन सूना सब यह संसार है।

वस्तु इसको न समझो, यह एहसास है।
जो मुस्कान ला दे, वो आभास है।
घनीभूत पीड़ा जब व्याकुल करे।
तब प्रभु के स्वरूप का जो आभास है।
वह दूजा नहीं, प्रेम का भास है।
वस्तु इसको न समझो, यह एहसास है।

जब रातें अँधेरी डराने लगें,
यातनाओं से हमको सताने लगें।
बिजलियाँ हम पर जब वो गिराने लगें।
तब सहारा जो बनता हमारा यहाँ,
बाँह थामे बचाता जो गिरने से है।
वह प्रेम का ही यहाँ रूप साकार है।
ईश का भी यहाँ प्रेम आधार है।

अमलेन्दु शुक्ल
सिद्धार्थनगर उ०प्र०

कौन..

मैं रूठा, तुम भी रूठ गए
फिर मनाएगा कौन ?

आज दरार है, कल खाई होगी
फिर भरेगा कौन ?

मैं चुप, तुम भी चुप
इस चुप्पी को फिर तोड़ेगा कौन ?

बात छोटी को लगा लोगे दिल से,
तो रिश्ता फिर निभाएगा कौन ?

दुखी मैं भी और तुम भी बिछड़कर,
सोचो हाथ फिर बढ़ाएगा कौन ?

न मैं राजी, न तुम राजी ,
फिर माफ़ करने का बड़प्पन,
दिखाएगा कौन?

डूब जाएगा यादों में दिल कभी ,
तो फिर धैर्य बंधायेगा कौन ?

एक अहम् मेरे, एक तेरे भीतर भी ,
इस अहम् को फिर हराएगा कौन ?

ज़िंदगी किसको मिली है सदा के लिए ?
फिर इन लम्हों में अकेला, रह जाएगा कौन ?

मूंद ली दोनों में से गर किसी दिन,
एक ने आँखें....
तो कल इस बात पर फिर छतायेगा कौन ?

अपूर्व शुक्ला
कटरा बस्ती, उत्तर प्रदेश

मनाने नहीं आऊंगा

खुश रहिये आप
मैं मनाने नही आऊंगा

मैं जो रूठा कभी
तो बताने नही आऊंगा

हमारी भी मुसीबत
तुम्हारी भी आफत

फर्क बराबर का है
मगर कभी जताने नही आऊंगा

रूबरू मैं नही शायद
तेरे नखरों से न वाकिफ

अपने दर्द को मैं
यूँ साझा करने नही आऊंगा

वो गली में तुम्हारा
यूँ ठिकाना बदल गया

उन सुहाने पलो का
उपहार देने नहीं आऊंगा

उलझे रिश्तों को
सुलझाओ भी तुम जरा

तेरी आँखों का नूर
और ख्वाब बन जाऊंगा

प्रियंक खरे "सोज"
मध्यप्रदेश

श्रमिक

मज़दूर हैं हम मज़बूर नहीं।
मज़बूत हैं हम मग़रूर नहीं।

दुनियां में ऐसी जगह नहीं,
हर काम किया हो जहां नही।
हमने ही बनाया ताजमहल,
हमने ही चुनीं थी मीनारे।
नदियों की चंचल धारा में,
हमने ही चुनीं सब दीवारें।
श्रमजीवी हैं डरपोक नहीं—
मज़दूर हैं—

दुनियां को पहनाया कपड़ा,
हमने ही बनाई शमशीरें।
सब देशों को हमने खोजा,
अपनी ही चलाकर पतवारें।
पर हम जैसे के तैसे ही रहे,
बदलीं न हमारी तकदीरें।
मेहनतकश हैं कमजोर नहीं—
मजदूर हैं—

प्रज्ञा शर्मा
प्रयागराज

गीत

अधरों पे मेरे शब्द मौन
मैं गीत कहाँ लिख पाऊँगी
मैं कतरा कतरा बिखरी हूँ
बिखरी ही मैं रह जाऊँगी

काली बदरी के आँचल में
कुछ मेरे सपने भीग गये
सीले सीले नैनों के मेरे
अक्षर भी सब सील गये
चुप की गठरी है सीने में
बस चुप ही मैं रह जाऊँगी

सूरज की किरनें चटकातीं
घुटती इन बूंदों के रंग
चंदन वन की खुशबू तिरती
मस्त हवाओं के संग संग
बंद मगर दिल के दरवाजे
ये खोल कहाँ अब पाऊँगी

चंचल किरनें प्रीत संदेसा
रोज़ साँझ को दे जातीं
तारों की नगरी में घुलकर
चांदनियाँ बिखरा जातीं
पलकन अश्रु बांध रहीं
किसकर मैं पढ़ पाऊंगी

कोकिला अग्रवाल
शास्त्री नगर, मेरठ

तरु बिं सूनी धरा

तरु है तो हम हैं,
तरु बिं सूनी धरा ।
ये हरियाली तभी तक है,
जब तक तरु नहीं है मरा।।

इस चमन में जो बहार है,
तरु बिं है वो भी अधूरा।
क्यों निष्ठुर हम बन गए हैं,
उपल है भाल पर पड़ा ।।

खोकर अपने अहंकार में,
भूल गए हैं कर्त्तव्य सारा।
बो रहे हैं बीज विनाश का,
जो लाएगी काली अंधेरा।।

तांडव आने से पहले ही,
कुछ लक्षण है दिख रहा।
तरु है तो हम हैं,
तरु बिं सूनी धरा ।।

नीर बिन व्याकुल हैं नदियां,
जंगल शहरों में सिमट रहा।
कण-कण में जो विष घोला,
वो किस्तों में है बंट रहा।।

रोज नई -नई बीमारियाँ ,
भू तल पर है पनप रही ।
कटते देख अपने सपूत को,
माँ बिलख बिलख रो रही ।।

जागो हे ! जनमानस जागो,
एक-एक वृक्ष माँ मांग रही है।
अभी बहुत देर नहीं हुई है ,
संभलने को प्रकृति कह रही।।

देखों कैसे तीनों चरों में ??
हाहाकार अभी से है मच रहा।
तरु है तो हम हैं,
तरु बिं सूनी धरा ।।

कुन्दन बहरदार
बनमनखी, पूर्णिया (बिहार)

समझौता

अब कोई खुल के जीता कहां है,
जहां देखो समझौता वहां है।

अब हर कहीं बस यही है होता,
अब हर कोई करता है अपने सपनों से समझौता।

कहीं किसी को अपने दिल की बात छुपानी पड़ती है,
तो कहीं गम में भी झूठी मुस्कान दिखानी पड़ती है।

कभी कभी तो सपनों पर जिम्मेदारी भारी पड़ती है,
मगर होती है मजबूरी, कि ना चाह कर भी वो जिम्मेदारी उठानी पड़ती है।

ये बस एक मेरे साथ नहीं सबके साथ यही अब होता है,
जहां घूमाओगे नजरें, तो पाओगे हर तरफ समझौता है।

जो दिल से निभाया जाए अब कहाँ वो रिश्ते होतें है,
पहले बंधन होते थे दिल के,
अब तो बस समझौते होतें हैं।।

संजीता घोष
नई दिल्ली

वाह रे ! जिंदगानी।

वाह रे! जिंदगानी,
क्या अजीब है तेरी कहानी!
जो चाहा वह पाया नहीं,
जो पाया वह चाहा नहीं,
यह सब तो हैं हरकते बचकानी,
न तूने जानी और ना मैंने जानी।

बचपन बीता आई जवानी,
करने लगे हम अपनी मनमानी,
की बहुत ही मौज भी मस्तानी,
समय निकला तो बुनी नई कहानी,
जब भी याद करूँ बचपन और
जवानी,
आँखों से भी बहता है पानी,
वाह री! जिंदगानी,
क्या अजीब है तेरी कहानी।

अब घर में थी सास,
और थी बहुएं घर की रानी,
आवाज सुनकर करती थी आनाकानी,

कभी सोचती थीं,
बूढ़ी कहीं माँगे ना दाना-पानी,
पल-पल बढ़ने लगी थी बेचैनी,
कैसे करें अब हम अपनी मनमानी,
वाह री! जिंदगानी,
क्या अजीब है तेरी कहानी।

यह तो है हर किसी की कहानी,
अब तो बस लेनी है हमें,
जिंदगी से आखिरी रवानी,
बस! यही होगी तेरी कहानी,
और होगी मेरी भी राम कहानी,
ना तूने कभी जानी और,
ना कभी मैंने जानी,
वाह री! जिंदगानी,
क्या अजीब है तेरी कहानी।

दीपिका कटरे
हड़पसर, पुणे

दोहा-माला

काल चक्र के सामने,
सभी हाल-बेहाल।
वनवासी हो राम जी,
बिता दिये दुष्काल।।

अहिल्या तो बिन गलती,
बनी काल का ग्रास।
मूक रही पाषाण बन,
करी राम की आस।।

राज-पाट की आस में,
लिये भीष्म सौगंध।
सत्यवती तरसत रही,
जीवन भर संबंध।।

काल बहुत बलवान है,
काल ही महाकाल।
जीवन का आधार भी,
और मरण भी काल।।

बंधन रूपी काल से,
मुक्ति होत आसान।
बुरे कर्म तज दीजिए,
सत-कर्मों को मान।।

शोभित गुप्ता
रामपुर, उत्तर प्रदेश

बस सिसकी है बाकी

धड़कनें भी अब सुस्त सी
होने लगी हैं
उस चिर-परिचित आहट
की प्रतीक्षा में
जिसे सुनते ही तेज हो
जातीं थी धड़कनें
उमंगें भी चहचहाने
लगतीं थीं
मधुर स्मृतियाँ भी
होठों पर गीत बनकर
गुनगुनाने लगती थीं
पर आज तो बस
नम हैं आँखें
रुंधे गले में
बस सिसकी है बाकी
बस सिसकी है बाकी...।।

विजय कनौजिया
अम्बेडकर नगर, उत्तर प्रदेश

दृष्टिकोण

"अरी बहू...! सुनती ही नहीं...! कब से पुकार रही हूं...!"
किसी काम से सासू मां ने फिर से बिस्तर से ही आवाज लगाई।
"अभी आई मांजी... थोड़ा सबर तो करो...।" बहू ने बुरा सा मुंह बनाते हुए बेमन से जवाब दिया।
"जा पहले उनकी बात सुन। उन्हें क्या तकलीफ है? बातें तो होती रहेंगी। अच्छा चलती हूं।" घर आई पक्की-सच्ची सहेली मीना ने उठने की कोशिश की।
"बैठ मीना बैठ... तुझे नहीं मालूम... कितनी दुखी हूं...।"
"नहीं रमा... ऐसा नहीं है... जरा, अपने दृष्टिकोण को बदल... इस गलत सोच में परिवर्तन ला... अपनी बुजुर्ग लाचार सासू मां की सेवा करना तो तेरा धर्म है... कल को तेरे भी बहू आएगी... तुझे भी इसी दौर से गुजरना है... जैसा करोगी वैसा ही पाओगी... अपने आपको बदलो...।" कहते हुए सहेली उठ खड़ी हुई।
हर यथार्थ का सामना करने के लिए रमा भीतर से तैयार होने लगी।

रशीद ग़ौरी
सोजत सिटी

मनुष्यता का अंत

मॉर्निंग वाक करते हुए गणेशी ने अचानक अपने पिताजी से पूछा, "पापा, क्या आपको भी ऐसा लगता है कि आगे चलकर मनुष्य जाति का अंत भी ठीक उसी प्रकार से हो जाएगा, जिस प्रकार से डायनासोर का हुआ।"

"बेटा, मनुष्य जाति का अंत कब और कैसे होगा, यह तो अभी नहीं कह सकता, परंतु मनुष्यता अब कोमा की स्थिति में है। मनुष्यता के अंत होने के बाद मनुष्य फिर मनुष्य कहाँ रह जाएगा बेटा?" शंकर जी कहते-कहते बहुत ही भावुक हो गए थे।

डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा
रायपुर, छत्तीसगढ़

राजदूत देवव्रत

राजदूत देवव्रत, महाराज जनक का सन्देश लेकर अयोध्या आते है और महाराज दशरथ को यह सन्देश देते है कि वो बारात लेकर मिथिला आये।

महाराज दशरथ, कुलगुरु और सभी अयोध्यावासी अति प्रसन्न होते है। कुलगुरु कहते है कि शुभ मुहूर्त देखकर बारात लेकर आएंगे। महाराज दशरथ, राम और लक्ष्मण के बारे में पूछते है। राजदूत राम और लक्ष्मण के बारे में बताते है, कि राम का पिता होने बड़े सौभाग्य की बात है, यह सौभाग्य तो देवताओं को भी प्राप्त नहीं है। महाराज दशरथ, राजदूत के वार्तालाप से बड़े खुश होते है और देवव्रत को कुछ उपहार देना चाहते है। एक सैनिक उपहार लेकर आता है।

राजदूत देवव्रत उस उपहार को देखते है, फिर महाराज की ओर हाथ जोड़ कर नम्र निवेदन करते है, "महाराज आप जैसे कीर्तिवानराजा से उपहार प्राप्त करना मेरे लिये सौभाग्य की बात है, परन्तु मैं यह नहीं ले सकता, क्योंकि यह अब हमारी बेटी सीता का ससुराल है, यहाँ से कुछ लेना, नीति और परम्परा के विरुद्ध है, इसलिए महाराज मुझे क्षमा करने की कृपा करें।"

कुलगुरु कहते है, "धन्य हो, धन्य हो, महात्मा जनक के राजदूत में ही ऐसे संस्कार हो सकते है।"

संजीव कुमार रंजन
राजेन्द्र नगर, गोपालगंज, बिहार

परिभाषा

गर्मियों की छुट्टियों में एक श्रीमान के यहाँ उनकी साली आई। श्रीमान की पत्नी की आवाज बहुत ही सुरीली थी। वो अपनी नन्ही सी बेटी को अक्सर लोरी गा कर सुलाती थी। जब वो लोरी गा रही थी तब श्रीमान की सालीजी ने उस लोरी को रेकार्ड कर वीडियो बना लिया सोचा दीदी इतना अच्छा गाती है। मै घर जाकर माँ को दिखाउंगी।

साली जी कुछ दिनों बाद घर चली गई। कुछ दिनों बाद श्रीमान की पत्नी को गंभीर बीमारी ने जकड़ लिया काफी इलाज करने के उपरांत वह बच नहीं पाई, चल बसी।

उधर पत्नी की मृत्यु का गम और इधर नन्ही बच्ची को सँभालने की चिंता। जब रात होती बच्ची माँ को घर में नहीं पाकर रोने लगती। हालाँकि वो अभी एक साल की ही थी। कुछ समझ नहीं आ रहा था कि आखिर क्या किया जाए।

साली जी आई तो उसने लोरी वाला वीडियो जब बच्ची को दिखाया तो वो इतनी खुश हुई और उसके मुँह से अचानक "माँ "शब्द निकला और हाथ दोनों माँ की और उठे। मानो कह रहे थे -'माँ मुझे अपने आँचल में ले लो तभी टीवी पर दूर गाना बज रहा था -*माँ मुझे अपने आँचल में छुपा ले गले से लगा ले की और मेरा कोई नहीं*।' उस समय के हालत से सभी घर के सदस्यों की आँखों में अश्रु की धारा बहने लगी।

ममत्व और भावना की परिभाषा क्या होती है यह किसी को समझाना नहीं पड़ा।

संजय वर्मा "दृष्टि"
मनावर, धार, म प्र

टें.. टें.. टें

"बहुत उदास दिखाई दे रहा है। बेचैनी है। इधर से उधर। उधर से इधर।" रुककर उसने उसे देखा।
"मैं कब से हूँ तेरे पास। तेरी छोटी सी दुनिया में कैद। साला...अब तो घर की छत को ही आसमान समझता हूँ।" उसकी बात सुनकर वह चौंका।
"क्यों रे, मैंने गाली दी तो चौंक पड़ा। और जो तू रोज़ वक़्त-बेवक्त देता है उसका क्या? मैंने तो सिर्फ़ नकल की है।" उसकी बात सुनकर हैरान था वह।
"इतना ही हैरान-परेशान तो मैं भी था। डंडी चुभो-चुभोकर बोलते थे न। बोल बेटा गुड मॉर्निंग...बोल बेटा सीताराम।मरता क्या न करता। सब रट लिया। जान बचाई, चोट से बचा।"
वह सिर पर हाथ फेरने लगा।
"सड़े-बासी अमरूद कई-कई दिन खाए। गली हुई मिर्च सटकी। पिंजरे से भी निकला तो उड़ा नहीं। ग़ुलाम जो बन गया था। डरने लगा था बाहर खाने को कुछ नहीं मिलेगा। बिल्ली झपट लेगी।"
उसने असमंजस से देखा।
"अक्ल का अंधा मैं। बाग-बगीचे, नदी का बहता पानी, पेड़ों की फुनगी, कच्चे-पक्के अमरूद सब भूल गया।"
बिना कुछ बोले उसने होंठ चबाए।
"अब तुझे कैसा लग रहा है इस पिंजरे में? घर में...? मैं चाहूँ तो उड़ सकता हूँ लेकिन तू...।" बात सुनते हुए उसकी बुझी आँखें दरवाज़े की ओर उठ गईं।
"लेकिन तू चाहकर भी नहीं निकल सकता। बँधा नहीं है फिर भी बँधा है।"
उसके चेहरे पर उदासी पुत गई।
"चल कोई बात नहीं। आ मेरे पास बैठ। दोनों टें...टें करेंगे।"
वह चुपचाप उसके पास बैठ गया।
तोते ने पँख फड़फड़ाये और चिल्लाकर बोला-
"टें...टें...टें..।"

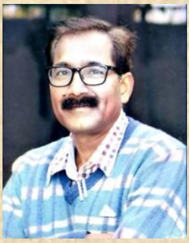

शिवचरण सरोहा
शकूर पुर, आनंद वास, दिल्ली

चेहरे

उन तीन-चार जोड़ी आँखों में पानी का प्रकोप हमेशा के लिये घर कर गया था, स्वप्न में भी उन्हें पानी का तांडव ही दिखाई देता। कुछ दिनों पहले तक जो नदी गाँव के बच्चों की छलांगों पर अपने पानी को उछाल-उछाल कर कहकहे लगाती थी, आज वही नदी उन्हीं बच्चों के घरों को लील चुकी थी, जो मकान बचे थे, उनके दिलों की धड़कन भी रुक सी गयी थी। गाँव एक टापू जैसा बन गया था।

इतने में एक घड़घडाहट की आवाज़ सुनते ही वहां खड़े लोगों की आखों में उम्मीद जाग उठी और सभी आसमान की तरफ देखने लगे। वहां हैलीकॉप्टर आ गया था। गाँव के लोगों ने स्वयं को दिखाने के लिए अपने हाथ हिलाने शुरु कर दिये। हैलीकॉप्टर धीरे-धीरे लगभग उनके सिर के ऊपर आ गया। सूरज के बादलों के पीछे छिपे होने से उन्हें आसमान में हैलीकॉप्टर को देखने में कोई मुश्किल नहीं हो रही थी, उनके लिये तो जैसे देवदूत आया था।

हैलीकॉप्टर में से खाने के पैकेट गिरने लगे, नीचे खड़े लोगों ने उन्हें बटोरा और ख़ुशी से मुस्कुरा कर हैलीकॉप्टर की तरफ देखा, और दोनों हाथों से 'काफी है' का इशारा किया। एक बुजुर्ग व्यक्ति ने आभार मानते हुए हाथ जोड़ दिये। हैलीकॉप्टर का पायलट भी संतोष से मुस्कुरा दिया।

ठीक उसी क्षण प्रेस कांफ्रेस में जाते समय एक मंत्री ने बाढ़ में फंसे लोगों के खाने के पैकेट के हिसाब की फाइल अपने निजी सचिव को थमाई। निजी सचिव फाइल के प्रारम्भ में कुल राशि देखकर आश्चर्य से आँखें उचकाता हुआ मुस्कुरा दिया। जिसे देख मंत्री आँखें तरेरते हुए फुसफुसा कर बोला, "हँस मत, शक्ल से ही लगना चाहिये कि पूरी सरकार दुखी है।"

डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी

चरित्र प्रमाण पत्र

सुबह की चाय पर वे घर आये थे। वे काफी उत्साहित लग रहे थे। आँखों में विशेष प्रकार की चमक और चेहरे पर खोखली मुस्कुराहट।

"बेटा राम तुम चिंता मत करना। कहीं भी किसी भी प्रकार की जरूरत पड़े मुझे याद कर लेना। किस्मत का खेल रहा कि भाईसाहब का साया इस छोटे से परिवार से इतनी जल्दी उठ गया पर मैं तुम्हारे साथ हूँ यह बात याद रखना"।

इतने में माता जी उनके लिए नाश्ता लेकर आईं। नाश्ता करते हुए वे फिर बोलने लगे।

"भाभी जी भाईसाहब और मैं एक साथ पढ़े, साथ में घूमे फिरे। बहुत लंबा हमारा उनका सम्बन्ध रहा है। आप राम बेटे की चिंता जरा भी ना करें, मैं उसे कभी इस बात का अनुभव नही होने दूँगा कि उसके सिर से पिता का साया उठ गया है। आप निश्चिन्त रहें"।

नाश्ता खत्म कर वे चलने के लिए खड़े हुए।

तभी राम की माता ने कहा -
"भाई साहब राम का चरित्र प्रमाण पत्र बनने के लिए सिविल लाइन पुलिस थाने में जमा है। आज उसे लेने के लिए बुलाया था, हो सके तो आप भी साथ चले जाते, बेचारा बच्चा है पुलिस वाले अजीब तरह के सवाल पूछने लगते है तो बेचारा डर जाता है"।

तत्काल उन सज्जन के चेहरे का भाव बदल गया। उनके चेहरे की उड़ चुकी हवाइयां इस बात का साफ़ संकेत कर रही थी कि उनके मस्तिष्क में हजारों तरह के सवाल विचरण करने लगे हैं और उनके आँखों में भय साफ़ देखा जा सकता था।

"हाँ... हाँ। चलो राम दो मिनट का तो काम है चरित्र प्रमाण पत्र लेकर आते हैं, अभी मिल जाएगा"।

पुलिस थाने के गेट पर उन्होंने गाड़ी रोकी और राम से कहने लगे - "राम तुम अंदर जाकर चरित्र प्रमाण पत्र ले लो। मैं यही बाहर तुम्हारा इंतजार करता हूँ"।

"पर चाचा जी मम्मी ने तो आपके साथ जाकर लाने के लिए कहा था" राम ने उनकी ओर देखते हुए कहा।

“हाँ... तो मैं...” उन्होंने लड़खड़ाती जुबान से कहा ।

"मैं यही हूँ ना बाहर दरअसल वो क्या है ना कि, वो मुझे एक जरूरी काम याद आ गया। जब तक तुम आओगे तब तक मैं काम निपटा लूँगा"।

राम थाने के अंदर चला गया। कुछ समय बाद जब वह चरित्र प्रमाणपत्र लेकर बाहर निकला तो उसे वो चाचाजी दूर दूर तक दिखाई नही दिए।

उस एक ही दिन राम को दो चरित्रप्रमाण पत्र प्राप्त हो गए थे।

मयंक अग्निहोत्री
खैरा, बगहा, सतना, मध्यप्रदेश

पढ़ाई शुरू हो गई ऑन लाइन

लॉक डाउन में पढ़ाई ऑफ लाइन,
अब पढ़ाई शुरू हो गई ऑन लाइन।
घर पर रह हम खेलें कूदें और पढ़ें,
ऑन लाइन पढ़ाई कर लें ज्वाइन।।

घर और माँ प्रथम शिक्षा का मंदिर,
शिक्षा ज्योति जलाना अपने अंदर।
मम्मी पापा सिखलाएँ अच्छी बात,
पढ़ने लिखने से जीवन बनता सुंदर।।

अचानक आए विपदा से बंद स्कूल,
साफ सफाई में न करें हम बच्चे भूल।
मनोरंजन के साथ ऑन लाइन पढ़ाई,
बढ़ती गर्मी में घर पर रहना है कूल।।

ऑन लाइन पढ़ाई भी होता है शाइन,
पढ़ाई लिखाई का माध्यम है फाइन।
अगले क्लास के कोर्स को हम सब को,
जीरो वन टू थ्री से ही करना है नाइन।।

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
बस्ती [उत्तर प्रदेश]
संपादक, "नव किरण" मासिक ई पत्रिका

हम बच्चों पर दया करो

रसगुल्ला की बहुत आ रही याद,
बर्फी पेड़ा छेना का बढ़िया स्वाद।
प्रभु! जी चलाओ कोई ऐसा जादू,
तुमसे करता हाथ जोड़ फ़रियाद।।

मेरे मम्मी को न मिल पा रही चाट,
गुस्सा बहुत उन्हें न जा पा रहीं हाट।
हे! प्रभु क्यूँ हम सब के ऊपर ज़ुल्म,
बाहर जा कर न दिखा पा रहे ठाट।।

घर में रह कर हो हम चुके हैं बोर,
बाहर जा कर न मचा पा रहे शोर।
टीवी गेम कैरम लूडो खेल के ऊबे,
मैदान में खेलने को मन मांगे मोर।।

चिप्स पिज्जा बर्गर व आइसक्रीम,
कोल्डड्रिंक की है पीने की चाह।
पार्क और शॉपिंग मॉल के हम तो,
जैसे एकदम ही भूल गए हैं राह।।

प्रभु जी हम आप के रूप कहलाते,
हम बच्चों पर कुछ तो दया करो।
पढ़ने लिखने खेलने की उम्र हमारी,
हमारे चेहरे पर प्रभु मुस्कान भरो।।

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
बस्ती [उत्तर प्रदेश]
संपादक, "नव किरण" मासिक ई पत्रिका

तोते का स्कूल

तोता बोला मैना दीदी
मैं खुलवाऊंगा स्कूल
जिसमें एक बगीचा होगा
उसमे होंगे सुंदर फूल

सभी पक्षियों के ही बच्चे
पढ़ने उसमें आएंगे
गौरैया बाज कबूतर को
हम साथ- साथबैठाएंगे

सब का वेश निराला होगा
वहां लगेगा शुल्क नहीं
कोई नहीं परीक्षा होगी
बस्ते का भी काम नहीं

उछलकूद के खेल निराले
रोज सभी से करवाऊंगा
छुट्टी दूंगा मनमानी मैं
नहीं हाजिरी भरवाऊंगा

मैना बोली तोते भैया
यह विचार है सुंदर
किंतु न रखना वहां कभी
अध्यापक कोई बंदर

नहीं तुम्हारे सपने सारे
मिट्टी में मिल जाएंगे
रोज सवेरे बंदर मामा
फूल तोड़ ले जाएंगे

भगवान प्रसाद उपाध्याय
गंधियांव करछना प्रयागराज , उत्तर प्रदेश

बाल कविता

पिंकी ने देखा गौरैया ।
बोली जल्दी आओ भैया।।
कितनी सुंदर कितनी प्यारी ।
साथ लिए है सखियां सारी ।।
बहुत दिनों पर आई है ।
बच्चों को ना लाई है ।।
फुदक फुदक कर चुगती दाना ।
चीं चीं चूं चूं गाती गाना ।।
आती नहीं किसी के पास ।
करती है सब का उपहास ।।
भैया इसको पास बुलाओ ।
डरे नहीं इसको समझाओ।।

राम लखन प्रजापति
संपादक, बच्चों की प्यारी बगिया
प्रयागराज उत्तर प्रदेश

घमण्डी बन्दर

बन्दर जी घमण्ड के मारे ,
फूले नहीं समाते थे ।
डाल-डाल पर उछल-कूद कर,
खूब छलाँग लगाते थे ।।
सभी बन्दरों ने समझाया ,
पर वे बात नहीं माने ।
वृक्ष-वृक्ष पर कूद-कूद कर,
लगे तमाशा दिखलाने ।।
करतब दिखलाते-दिखलाते ,
डाल हाथ से छूट गयी ।
बन्दर राजा गिरे भूमि पर ,
हड्डी-पसली टूट गयी ।।
उठा नहीं जाता है उनसे ,
चकनाचूर घमण्ड हुआ ।
बैठे रहते अब मन मारे ,
गाल बजाना बन्द हुआ ।।
प्यारे बच्चो! ध्यान रहे यह ,
कभी न बनना अभिमानी ।
उस उत्पाती बन्दर -जैसी ,
मत करना तुम शैतानी ।।

डॉ. त्रिलोकी सिंह
हिन्दूपुर, करछना, प्रयागराज

फलों का मेला

गर्मी का मौसम अलबेला,
लगा हुआ है फलों का मेला।
प्यास बुझाता सबका खीरा,
तरबूज है सच में हीरा।
ककड़ी भी बिकती है ख़ूब,
सबको भाता है खरबूज़।
गर्मी में बनता है सहारा,
संतरा है सचमुच प्यारा।
ठेलों पर दिखता भरपूर,
खट्टा नहीं मीठा अंगूर।
मीठी-मीठी चीनी सी,
पूछ बहुत है लीची की।
एक नहीं ले लो दो चार,
आम से महका है बाज़ार।
स्वाद में राजा होता आम,
फलों का राजा इसका नाम।

मु. जलालुद्दीन खान
देवरिया, उत्तर प्रदेश

मोबाईल का ज़माना

मोबाईल का है ज़माना,
सभी इसी में लगे हुए हैं।
अता - पता अब नहीं समय का,
सभी इसी में डूबे हुए हैं।।

रिंकी - मिंकी दो सखियाँ,
व्हाट्सएप में चैट कर रहे हैं।
कम नहीं भई सोनू - मोनू,
दोनों फेसबुक चला रहे हैं।।

खेल रहा कोई वीडियो गेम,
कोई गूगल सर्च कर रहा।
कोई यू-ट्यूब में वीडियो को,
देखो तो अपलोड कर रहा।।

एक घर, पर अलग-थलग सब,
मोबाईल के चलते।
हैं पास-पास, पर मुंह बंद है ,
मोबाईल के चलते।।

प्रमोद सोनवानी पुष्प
श्री फूलेन्द्र साहित्य निकेतन
तमनार/पड़िगाँव – रायगढ़, (छ. ग.)

चूहा बोला बिल्ली से

चूहा बोला बिल्ली से,
कब लौटी तुम दिल्ली से?
क्या मेट्रो में सफ़र किया,
जलेबी के संग दूध पिया?
बताऊँ क्या दिल्ली के बात,
जैसा दिन वैसी ही रात!
बाईं तरफ़ न जाता जो,
घर नहीं आ पाता ओ!
लाल बत्ती के जलने पर,
गाड़ियाँ रुक जाती हर।
हरी बत्ती दिखती जब,
रेस मारती सबकी सब।
प्रदूषण से हर एक दुखी,
शिक्षा स्वास्थ्य से भले सुखी।
कई मंजिल के भवन बने,
दूर-दूर नहीं बहुत घने।
धुयें से है डैम घुटता,
सीधा साधा है लुटता!
सुनकर चूहा हो गया दंग,
उतरा तब चेहरे का रंग।
उनसे अच्छे हम ही यहाँ,
भीड़-प्रदूषण नहीं जहाँ।
बैर भाव अब जाएँ भूल,
चलेंगे एक साथ स्कूल।
सुनकर यह चूहे की बात,
खुश होकर उसने मिलाया हाथ।

डॉ सुरेन्द्र दत्त सेमल्टी
पूजार गाँव, चन्द्रबदनी, टीहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

बेर

शेर कहीं से लाया बेर।
बेर थे पूरे दो सौ सेर।।

सारे जंगल में बँटवाए।
सबने खूब मज़े से खाए।।

बन्दर खाया इतने बेर।
खाकर हुआ पेड़ पर ढेर।।

नींद मज़े की ऐसी आई।
सोता रहा चार दिन भाई।।

हाथी खाया इतने बेर।
दो सौ में से सत्तर सेर।।

खाकर मारी जोर डकार।
पेड़ गिर पड़े दो सौ चार।।

मक्खी ने खाए दो बेर।
बोली-"जय हो राजा शेर"।।

खाकर ऐसी वो भिन्नाई।
मच्छर भागे डर कर भाई।।

सबको खूब खिलाकर बेर।
"मौज करो"-फिर बोला शेर।।

गौरव वाजपेयी 'स्वप्निल'
शाहजहाँपुर , उत्तर प्रदेश

साइकिल है, भाई

ये हमारी यादों में, --
बसी हुई, बचपन के--
फिल्म की कुछ रील है, भाई.
ये कैची, मार के चलाता हुआ, मैं
और हमारे दादा की----
बहुत प्रिय, साइकिल है, भाई.
इस तरफ ----
धान की लहलहाती फसल
और उस तरफ ----
सिंघाड़े वाली झील है, भाई.
जहां गिरे, चोट तो न आई ,
पर डर गया, उस समय
घर लगा जैसे ----
बहुत मील है, भाई.

दबे पांव,
बचने की जुगत फेल हुई,
दादा ने ,कड़क कर पूछा ,
कहाँ गये थे,
उफ !! डर-सहम गया
और सांस यूं लगा कि,जैसे
साइकिल की----
टूटी हुई तील है, भाई.
लेकिन ,दादा समझ गये ,
प्यार से मुझे दुलारा - पुचकारा
और कहा,----
पगले!! मेरे पोते से अच्छी
और प्यारी इस दुनिया में----
नहीं कोई साइकिल है, भाई.

रंगनाथ द्विवेदी
जज कालोनी,मियांपुर, जौनपुर, उत्तर प्रदेश